

चाईबासा का इतिहास

PG (History)
sem -3
session -2020-22
project work
kolhan University,
chaibasa

by

Moumita Dutta
Address: Amrapali restaurant, bada nimdih , chaibasa
e-mail: moumitassbm@gmail.com

Name of the Topic

चाईबासा का इतिहास

Kolhan University, Chaibasa

PG Semester III Project Work

Submitted to

Department of History
Kolhan University
Chaibasa

Submitted by

Name of the student. MOUMITA DUTTA
University Roll No. 212606322760
Registration No. KU2035587
PG Semester III
Session.. 2020-22

Declaration

I hereby declare that the project work submitted by me on the topic '...CHAIBASA KA ITIHAS...' is largely a work of my own efforts, immensely supported by the invaluable suggestions by my teachers.

Signature of the student: Moumita Dutta

PG Sem III

Class Roll No: 166

University Roll No: 212606322760

Session: 2020-22

Kolhan University, Chaibasa

CERTIFICATE

This is to certify that MOUMITA DUTTA bearing KU Roll No. 212606322760 a student of Post Graduate Programme, Semester III in History has prepared a project on 'CHAIBASA KA ITIHAS' as per the provision laid down in the syllabus of KU, Chaibasa.

(Dr. Sanjay Nath)
Head, Department of History
Kolhan University, Chaibasa

विषय-सूची

Date :
Page :

विषय - सूची

ClASSMATE
Date :
Page :


आभार ज्ञापन

CLASSMATE
Date :
Page :

आभार

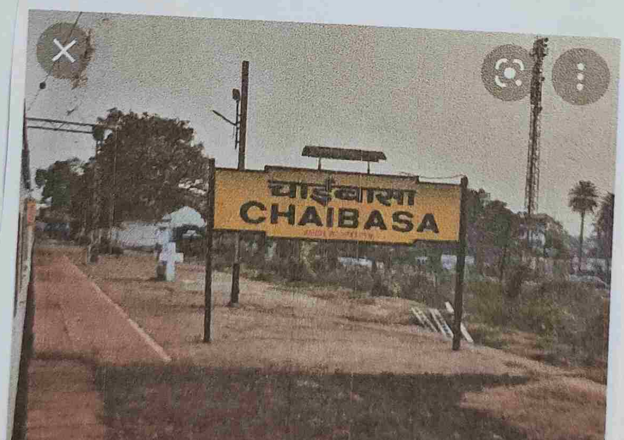
इस आभार पत्र के माध्यम से मैं उन सभी लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूं, जो इस शोध कार्य से जुड़े हैं। जिन्होंने हमारी सहायता की है तथा इस परियोजना कार्य को सार्थक अनुभव बनाया है। जिन्होंने अपनी राय, अनुभव साझा किया एवं जिनके माध्यम से मुझे अपनी परियोजना कार्य के लिए जरूरी जानकारियां प्राप्त हुई।

परियोजना कार्य की अनुमति देने तथा इनके विभिन्न पहलुओं की आवश्यक जानकारी देने, इसमें आवश्यक सुधार करने तथा उनके द्वारा दी गई महत्वपूर्ण सुझावों के लिए, मार्गदर्शन करने के लिए मैं डॉ० संजय नाथ जी (विभाग प्रमुख), माधुरी जी, मनोज जी, राजेश जी का विशेष रूप से आभारी हूँ। साथ ही, अन्य सदस्यों को भी आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने समय-समय पर उत्पन्न होने वाली असुविधाओं के बावजूद इस परियोजना कार्य के संपादन एवं समर्थन में सहयोग किया। उनकी सहयोग एवं धैर्य के लिए मैं अंतर्मन से उनको धन्यवाद देती हूं।

अंत में, अपने परिवारजनों तथा मेरी सहपाठियों को बहुत आभार व्यक्त करती हूं, जिनके द्वारा की गई अनमोल समर्थन, सहयोग, स्नेह से मैं अपनी इस परियोजना कार्य को पूर्ण कर पायी हूँ। इनके निरंतर हौसले, अपेक्षित सौहार्दपूर्ण सहायता के लिए तथा अपने सभी गुरुजनों को हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

धन्यवाद !

प्रस्तावना



Date :
Page :

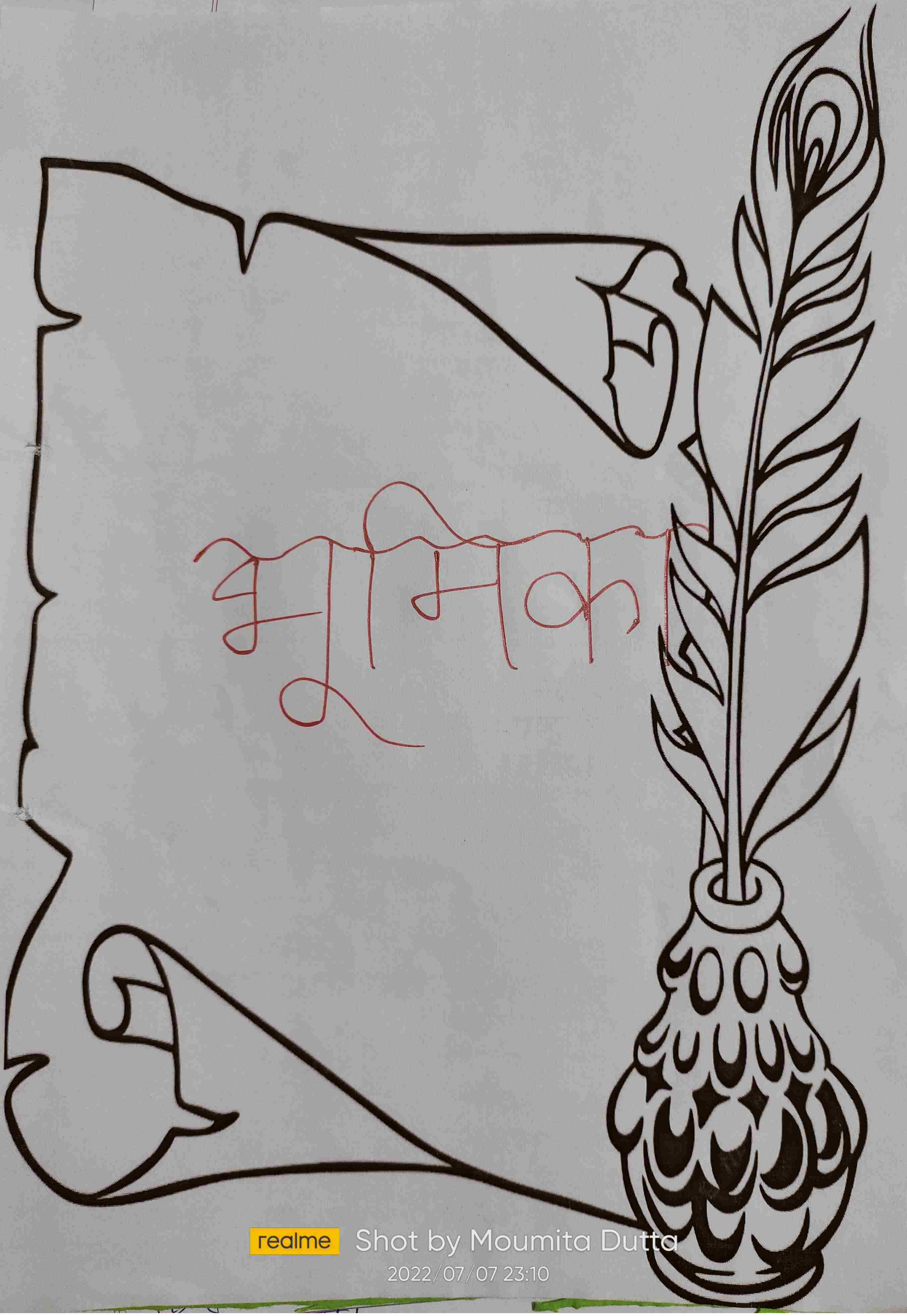
प्रस्तावना

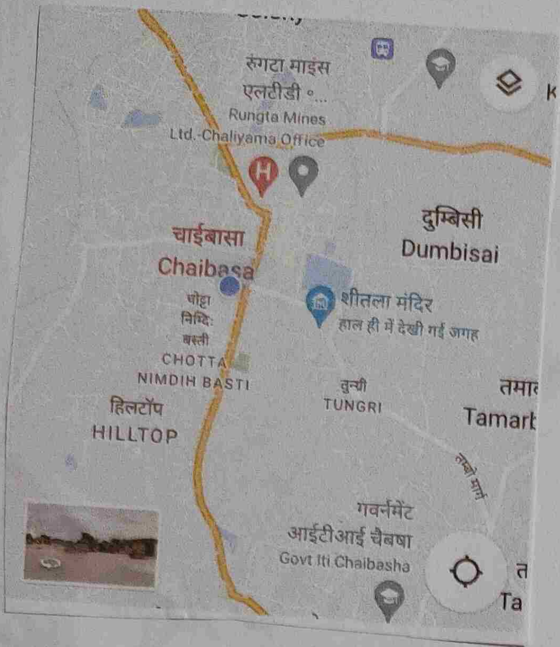
विषय विवरण :- चाईबासा शहर का इतिहास

प्रस्तुत परियोजना कार्य में दिए गए विषय विवरण के अनुसार चाईबासा शहर के इतिहास के विषय में विस्तृत एवं यथासंभव सरल, सुगम जानकारियाँ है। इसमें चाईबासा शहर के उद्‌भव, उनसे संबंधित घटनाओं, विस्तार, नामकरण विचार-धाराओं, महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जानकारियाँ, उपलब्धि, कमियाँ, पर्व-त्योहारों का समावेश, धार्मिक मान्यता, रहन-सहन तथा पश्चिम सिंहभूम के जनजातियों के विषय में विस्तृत तथा यथासंभव उचित जानकारी दी गयी है, जिन्होंने इस शहर के इतिहास से किसी न किसी रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस परियोजना कार्य के द्वारा हम चाईबासा शहर के इतिहास का महत्व सरलता से समझ पाएं, ऐसी प्रयास की गई है।

इतिहास केवल घटनाओं और तिथियों का समूहमात्र नहीं है, बल्कि उनके भीतर से प्रवाहित होने वाली किसी भी स्थान की जीवन धारा है। किसी भी स्थान के इतिहास की आत्मा को पहचानने के लिए उसकी परंपरा एवं जातीय संस्कारों से परिचित होना आवश्यक है। इस परियोजना कार्य को आकर्षक, प्रभावशाली तथा सुगम-सरल बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, जो चाईबासा के इतिहास से संबंधित प्रत्येक तथ्य से सीखने की प्रबलता तथा ज्ञान की बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा।

भूमिका





चाईबासा

कस्बा



झारखंड, भारत में स्थान

झारखंड का नक्शा दिखाएं

भारत का नक्शा दिखाएं

सब दिखाएं

निर्देशांक: 22.57°N 85.82°E



भूमिका

भूमिका:- चाईबासा भारत के झारखण्ड राज्य में पश्चिम सिंहभूम जिले का एक कस्बा और एक नगरपालिका है। चाईबासा पश्चिम सिंहभूम जिले का जिला मुख्यालय है। यह संभागीय आयुक्त की अध्यक्षता में सिंहभूम कोल्हान संभाग का मुख्यालय भी है। यह एक खनन केन्द्र के साथ-साथ झारखण्ड के सबसे प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानि बिरसा मुण्डा के गृह नगर होने के लिए प्रसिद्ध है।

1837 में कोल्हान पर ब्रिटिश विजय के बाद एक नए जिले के रूप में सिंहभूम उभर कर आया, जिसका मुख्यालय चाईबासा है। इसके बाद पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला, खरसावां के तीन जिले सिंहभूम में एक साथ आए तथा चाईबासा मुख्यालय के रूप में बनाए गए।

सदर चाईबासा अनुमण्डल के अंतर्गत कुल सात प्रखण्ड आते हैं— चाईबासा, खुटपानी, टोंटो, हाटगम्हरिया, तांतनगर, झींकपानी और मंझारी। चाईबासा में अधिकांश वर्तमान रोजगार सरकारी संस्थाओं के कर्मचारियों के रूप में है। चाईबासा के अतीत में रोजगार को लेकर ऐसी स्थिति नहीं थी। एसीसी नामक सीमेंट बनाने वाली कम्पनी का कारखाना चाईबासा से 18 किलोमीटर दूर झींकपानी में स्थित है। एस.आर. रूंगटा नामक स्टील छड़ बनाने वाली कम्पनी का कारखाना चाईबासा से 10 किलोमीटर दूर चालियामा में स्थित है।

यह तो चाईबासा के अतीत, वर्तमान स्थिति का परिचय दिया गया। आइए, अब हम जानेंगे चाईबासा के अतीत के विषय में, चाईबासा के नगरायण से जुड़ी सर्वेक्षण के बारे में।

चाईबासा शहर की स्थापना

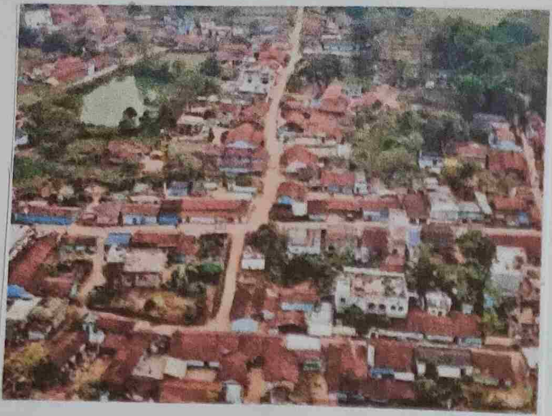
एवं

उसका नामकरण


चाईबासा 180 वर्षों से जिला मुख्यालय

चाईबासा शहर की स्थापना :

चाईबासा शहर की स्थापना 1837 में हुई। वर्ष कोल्हान गवर्नमेंट स्टेट के गठन के बाद गुमड़ा पीड़ के अंतर्गत कुछ गाँवों को मिलाकर अंग्रेजों ने अपना सदर कार्यालय बनाया, संभवतः ये गाँव तिरिलकुटि एवं पुतुदिरी थे। बाद में चाईबासा नगरपालिका में अन्य गाँव जैसे निमडीह इत्यादि भी शामिल हुए। चाईबासा शहर के स्थापना के विषय में यह जानकारियाँ एकत्रित हो पायी है। चाईबासा घने जंगलों तथा पहाड़ों से घिरा हुआ बसा एक शहर था, यहाँ दूर-दूर तक घने जंगल साल के वृक्षों की हरियाली देखने लायक है। यह एक ऐतिहासिक शहर है। यह शहर 100 वर्षीय जिला मुख्यालय है। अंग्रेजों ने जब 1837 ई० में कोल्हान पर विजय प्राप्त की तो वह इस शहर में आए। उस समय इस छोटे से शहर में एक ही छोटा-सा घर देखने को मिला था और वह था एक आदिवासी का घर उसका नाम चोयो देवगम था। मान्यता के अनुसार शायद उसके बाद ही शहर का नामकरण हुआ था। इससे यह तो पता चलता ही है कि चाईबासा में ऐतिहासिक काल से आदिवासी या 'हो' समाज के लोग ही वासिंदे थे। कालांतर में इस शहर का विस्तार हुआ, यह शहर मुख्यतः दो चीजों के लिए अत्याधिक प्रसिद्ध हुआ — ① बिरसा मुण्डा के जन्मस्थल के स्वरुप में ② माइनिंग हब के कारण।



पश्चिमी सिंहभूम जिले के सोनुवा प्रखंड का पोड़ाहाट गांव प्राचीनकाल में सिंहभूम की राजधानी था।



Jagran
खरसावां राजघराने के राजा प्रदीप ...



Facebook
The Seraikela Palace is a 300... -



Similipal National Park
Explore Mayurbhanj Palace



Facebook
The Seraikela Palace is a 300... -



Worldorgs.com
Raj Mahal ଖରସୁଆଁ ଗଡ in the city Kharsawan

चाईबासा शहर का नामकरण :

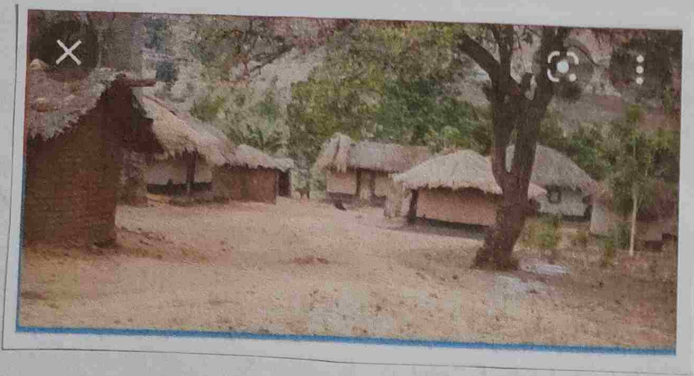
शहर का नाम 'चाईबासा' क्यों और कब पड़ा, इस संबंध में कोई स्पष्ट तथ्य उपलब्ध नहीं है। इसके नामकरण के संबंध में विभिन्न धारणाएँ प्रचलित हैं। प्रथम धारणा है कि वृक्षों की सघन छाया के बीच घिरे होने के कारण इसे 'चाईबासा' कहा गया। आज भी बाहर से चाईबासा में प्रवेश करते समय पेड़ों की सघन छाया के बीच यह शहर दृश्यमान होता है। अन्य मत यह है कि चाई या चोरों का आश्रय स्थल होने से यह चाईबासा या चाईबासा कहलाया, हो सकता है कि सिंहभूम के रजवाड़े के दलदल से भागकर अपराधी यहाँ छिपते थे। पर कब और क्यों चोरों ने छुपने के लिए इस जगह को ही चुना कहना कठिन है। अन्य धारणा के अनुसार पोड़ाहाट, सरायकेला, खरसावाँ एवं मयूरभंज के चार राजाओं के वास स्थान या बासा यानि कि घर यहाँ होने के कारण शहर को चारिबासा नाम मिला, जो समयोपरांत चाईबासा हो गया। किन्तु शहर निर्माण से पहले राजाओं के बासा का यहाँ बनना तर्कसंगत नहीं लगता। अंतिम मत यह है कि प्रथम मुंडा 'चोय मुंडा' के नाम के स्थान का नाम चाईबासा पड़ा। कोल्हान के गाँवों के नामकरण के पीछे साधारणतः ग्राम की संस्थापना में आदिपुरुष (हाम) की भूमिका को अमर बनाने की परम्परा है। संभवतः चौ मुंडा के स्मृति में

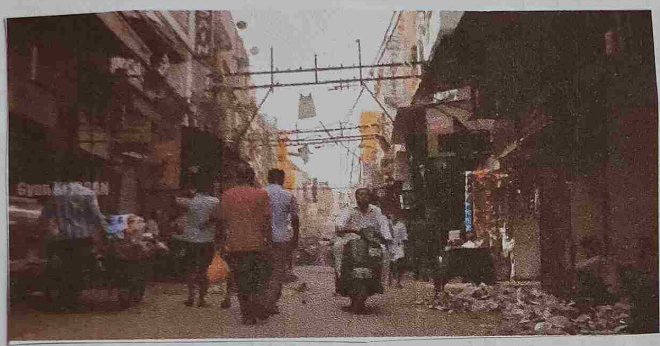
स्थान का 'चैबासा' रखा गया, कालांतर में
चाईबासा। अनुमान के अनुसार वृक्षों से भरा
स्थल, वृक्षों की छाया के कारण 'छायाबासा',
कालांतर में चाईबासा। अब भी चाईबासा
वृक्षों से भरा है। मुख्यालय के मुख्य मार्ग
पर अवस्थित क्षेत्र नीमडीह का नाम संभवतः
'नीम' वृक्षों का 'डीह' क्षेत्र से है। इस क्षेत्र
में अब भी प्रायः नीम के वृक्ष हैं। स्थानीय
वर्तमान स्थित उड़िया विद्यालय के भवन में 'चारिबासा'
शब्द अब भी देखा जाता है। जो अनुमान
के अनुसार तब पड़ा था जब पोड़ाहाट, सरायकेला,
खरसावां तथा मयूरभंज के 4 राजाओं के सभा
स्थल या रहने का घर होने के कारण
इस स्थान का नाम 'चारिबासा' पड़ा होगा एवं
कालांतर में चाईबासा। चाईबासा में 'सरस्वती
हरिबोल कॉमिटी' के मुख्य द्वार पर स्थित पीपल
का छायादार एवं घना वृक्ष यहाँ के नामकरण
को दर्शाती है तथा यह अत्यंत पुराना वृक्ष पर्यावरण
का एक प्रतीक है।

19वीं सदी में हुई चाईबासा शहर के विभिन्न हिस्सों का विकास

19 वीं सदी में हुई चाईबासा शहर के विभिन्न हिस्सों का विकास:-

भयंकर गर्मी और बंजर जमीन से घिरे इस स्थान से अंग्रेज पदाधिकारी खुश नहीं थे। 1854 ई० में रिकेटस ने कहा - चाईबासा में आकर्षण के लायक कुछ भी नहीं थे। ऐतिहासिक या शुरुआती समय में यहाँ कुछ भी नहीं था। अर्थात लोग यहाँ बसना भी नहीं चाहते थे। लोग आखिर ऐसे स्थान पर अपना आवास बना कर करते भी क्या? न ही यहाँ देखने योग्य कुछ था, और न ही अपना जीविकोपार्जन हेतु भूमि उस योग्य थी यहा जीवन बसने या आबादी फैलने से पहले यह स्थान बिलकुल बिरान थी। संभवतः इसीलिए सरकारी पदाधिकारी, जैसा कि 1868 में बाल ने बताया, चाईबासा में पदस्थापन को सजा मानते है, जैसे कि उन्हें स्थानांतरण के दौरान सजा मिली हो। पर इसके बावजूद धीरे-धीरे शहर का विकास होता गया। 1991 ई० की जनगणना के अनुसार शहर का इलाका एक वर्ग मील था, वहाँ 6006 लोग रहते थे। 19 वीं सदी के अंत तक चाईबासा मानो बाजारों का शहर था। इसके विभिन्न हिस्सों का नाम चुनीबाजार, कानीबाजार, चकबाजार, चौधरीबाजार, शामबाजार, सदरबाजार, कोतवालीबाजार एवं मधुबाजार था। अमला टोलो, वकील टोला, तुरीटोला, यूरोपियन कम्पाउन्ड,







classmate
Date :
Page :

बड़ा नीमडीह आदि अन्य मुहल्ले थे। बाद में बरकन्दाज टोली, सेन टोला, डुंगरी आदि बसे, इस प्रकार इस वीरान पड़े स्थान पर लोगों का वास स्थान बनने लगा। लोगों के जीविकोपार्जन के छोटे - छोटे स्रोत खुलने लगे। अपने उपार्जन की गयी राशि से लोग छोटे - छोटे बाजारों में जाकर अपनी जरूरत की चीजें खरीदते थे। आबादी में वृद्धि होने से शहर में लोगों का जमघट लगा रहता था। चहल - पहल से भरी छोटी - छोटी बाजारें, टोली, मोहल्ले का दृश्य काफी मनोरम लगता था। लोग अपनी छोटी - छोटी जरूरतों को पूरा कर खुशी से रह लेते थे। शहर के मकान भी दो तरह के थे। सम्पन्न लोगों के मकान पत्थर से बने, खपरे या टाली की छत वाले होते थे। गरीबों के मिट्टी एवं पुआल की छत वाले मकान या घर होते हैं। शहर में विभिन्न हिस्सों का विकास होने पर अमीरी और गरीबी का अंतर पता चलता था। अमीरों के रहन - सहन, वातावरण, घर तथा घर में सजावट की सामग्रियाँ, उनके पहनावा तथा खान - पान गरीबों के तुलना में बहुत अलग थी। फिर भी इस शहर के नए रूप तथा विकास से लोग खुश थे। आखिर बहुत समय के पश्चात ऐसा समय आ चुका था, जब लोगों के रहने योग्य यह शहर का शहरीकरण हो रहा था।

चाईबासा शहर का पिछड़ापन
एवं
एकरस जीवन शैली

Classmate
Date :
Page :

चाईबासा शहर का पिछड़ापन एवं एकरस जीवन-शैली

इस खण्डित नगरायण की प्रक्रिया का आकलन हम जनसंख्या में वृद्धि के तुलनात्मक विश्लेषण से कर सकते हैं। जमशेदपुर की स्थापना 1907 ई० में हुई थी। 1911 ई० में इसकी कुल जनसंख्या 5673 थी जो 1951 में 2,18,162 हो गई। किन्तु 1837 ई० में स्थापित चाईबासा की आबादी इस दौरान 16,575 तक ही पहुँच सकी, आधारभूत सुविधाओं में जिले के इस सदर शहर का पिछड़ापन चौंकाने वाला था। शहर की एकरस जीवन-शैली के कारण सरकारी पदाधिकारियों के लिए चाईबासा की जगह जमशेदपुर में रहना मानो नियम था। सामाजिक नेतृत्व वकीलों, व्यापारियों एवं खान मालिकों के हाथों में था। चाईबासा मेला, प्लेग, बाढ़ आदि के समय सामान्य चंदा देने अथवा स्कूलों के निर्माण में इनकी भागीदारी के अलावा चाईबासा के समग्र विकास के प्रति वे उदासीन बने रहे। ब्रिटिश सरकार ने भी शहर अथवा जिले के समुचित विकास की ओर ध्यान नहीं दिया। चाईबासा शहरवासियों का जीवन-शैली निरस बनी रही।

चाईबासा शहर की प्रारंभिक समस्याएँ

चाईबासा की समस्याएँ

19वीं सदी तक आधारभूत सुविधाएँ हमेशा जरूरतों से कम रही, जितनी सुविधाएँ शहरवासियों को मिलनी चाहिए थी, उसके अपेक्षा नगरवासियों को सुविधाएँ कम उपलब्ध करवायी गयी, शहरवासियों की दिक्कतों एवं असुविधाओं को देखते हुए भी सरकार उनकी समस्याओं एवं जरूरतों की पूर्ति तथा समाधान करने में असमर्थ रही। कारण यह कह सकते हैं कि सरकार का ध्यान खनिज एवं वनज संपदा की दुलाई की ओर ज्यादा था। चाईबासा में खनिज एवं वनज संपदा की खोज होने की पश्चात चाईबासा शहर नाम मानचित्र में तो अवश्य आ चुका था और इस संसाधनों के मिलने से सरकार को तो अपनी जरूरतें तथा उनकी पूर्ति हो चुकी थी किन्तु शहरवासियों की जरूरतों को तथा उनकी समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया गया। शहर के लोगों को पानी की पूर्ति के लिए रोरो नदी, कुछ कुओं तथा तालाबों पर निर्भर रहना पड़ता था। रात होते ही चाईबासा शहर घने अंधकार में डुब जाता था क्योंकि सड़कों पर रोशनी की व्यवस्था अपर्याप्त थी। सड़कों की सुविधा जरूरत से कम थी, इनके रख-रखाव तथा मरम्मत के लिए धन की कमी थी। जिसके कारण जो भी बची-कुची सड़के थी, उनकी हालत भी बदतर हो चुकी थी। यात्री सवारी की समुचित व्यवस्था नहीं थी। इससे न

केवल आवागमन एक विकट समस्या थी बल्कि चाईबासा एवं कोल्हान का क्षेत्र, विकास की मुख्य धारा से कटा हुआ था। 1930 के दशक तक शहर में न कोई छापाखाना था और न ही यहाँ से प्रकाशित होने वाला कोई संवादपत्र या पत्रिका। इससे चाईबासा शहरवासियों की ज्ञान, शिक्षा, विकास में बहुत हानि हुई। लोगों को पूरी दुनिया में होने वाले घटनाओं के विषय में कोई जानकारी नहीं रहती थी। शिक्षा में अभाव के कारण भी यहां की जनता बहुत समय तक निरक्षर बनी रही। चाईबासा शहरवासियों का जीवन कुएँ में रह रहे मेंढकों की तरह थी। सरकार की निराश कर देने वाली इस रवैये से चाईबासा शहरवासियों के मन में हताशा जन्म ले रही थी। जनमत को संगठित करने एवं नागरिक सुविधाओं के विकास हेतु आवाज उठाना इन्हीं कारणों से मुश्किल था। समसामयिक अथवा उम्र में इससे छोटे शहरों का जिस तेजी से विकास हुआ, चाईबासा के विकास की गति उनकी तुलना में धीमी रही। सड़क अथवा रेल यातायात की सुविधा में कमी, गुणात्मक शैक्षिक सुविधा का अभाव, रोजगार के उचित साधनों का अभाव, आवास, पेयजल एवं बिजली संकट के चलते एक समय तक शहर का जीवन ठिठका हुआ-सा था। आगमन की जगह पलायन ही शहर की नियति बनती जा रही थी। पश्चिम सिंहभूम का विकास गतिशील नहीं थी। पर्यटन के दृष्टिकोण से पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते जैसा आधारभूत सुविधाएं नहीं होने के कारण शहर में [illegible] संचार नहीं हो पा रहा था। यह सक्षम राजनीतिक, प्रशासनिक [illegible] नेतृत्व में अभाव के कारण था।

चाईबासा शहर की तत्कालीन प्रशासनिक रूपरेखा

चाईबासा शहर की प्रशासनिक रूपरेखा:-

चाईबासा का जन्म एक प्रशासनिक शहर के रूप में हुआ, यहाँ के लिए एक असिस्टेंट पॉलिटिकल एजेन्ट की नियुक्ति हुई। बाद में डिप्टी कमिश्नर कहलाए। एक नन रेगुलेशन जिले के रूप में यह गवर्नर जेनरल के एजेन्ट के अधीन था। प्रारंभिक दशकों में सबडिविज़न का सृजन नहीं हुआ था। भूमि राजस्व की वसूली के लिए कार्यालय खोले गए, शांति व्यवस्था के लिए पुलिस अधीक्षक थे, जो अपना कार्य विधिवत तथा निष्ठा से करते थे। किन्तु विभाग अत्यंत संक्षिप्त था। चोर, डकैतों, लुटेरों अपराधियों पर नज़र रखने के लिए पुलिस व्यवस्था सक्षम थी क्योंकि शहर का विकास होने के बावजूद जनसंख्या अर्थात् कम आबादी वाला छोटा शहर होने के कारण शहर के लोगों पर नज़र रखना सुविधाजनक था। बिजली समस्या पुराने समय बहुत अधिक थी जिसके कारण शाम होते ही चोर-लुटेरों का भय बना रहता था। जिस कारण बाजारें भी एक समय के अनुसार बंद कर दी जाती थी। रात के समय चोर-लुटेरों, अपराधियों से शहर की रक्षा के लिए बहादुर तैनात किए जाए थे, जो अलग-अलग हिस्सों में रात के समय रास्तों पर घुमते थे तथा लोगों को सीटी बजाकर तथा लाठी ठोक कर, तथा [illegible] बोलकर आगाह करते थे, इस [illegible] से शहर में जनता

के रक्षा के विभिन्न यथासंभव प्रयास किया जाता था। गाँवों में मानकी मुण्डा पर अमन-चैन का दायित्व था। न्याय प्रशासन के क्षेत्र में जिला बाँकुड़ा एवं पुरुलिया के द्वारा नियंत्रित होता था, किन्तु चाईबासा में डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी मजिस्ट्रेट, सबजज एवं मुंसिफ फौजदारी एवं दीवानी न्याय से संबंधित मामलों का निष्पादन करते थे। सम्पूर्ण सिंहभूम जिले के प्रशासनिक प्राणकेन्द्र के रूप में धीरे-धीरे चाईबासा की पहचान बनी। समय के साथ अन्य सुविधाओं का प्रबंध हुआ। इस प्रकार चाईबासा शहर की प्रशासनिक रूपरेखा बहुत अच्छी नहीं थी किन्तु कालांतर में धीरे-धीरे सभी चीजें बदलती रहीं एवं उनके विकास में निरंतर वृद्धि होती रही। प्रशासनिक रूप में भी चाईबासा अपनी पहचान बनाने लगी।

realme Shot by Moumita Dutta
2022/07/07 23:18

चाईबासा में हुई
नगरपालिका का
गठन
तथा
अस्पतालों की स्थापना

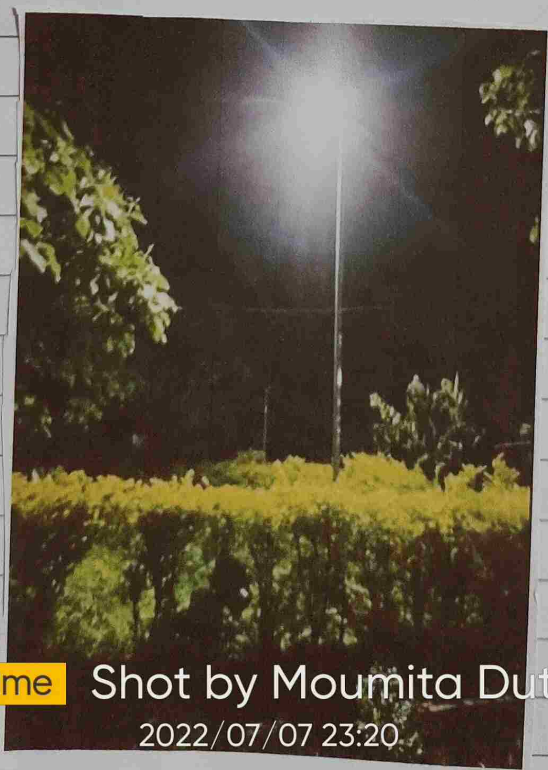

पोषण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

19वीं-20वीं सदी के उत्तरार्द्ध चाईबासा में नगरपालिका का गठन तथा अस्पताल की स्थापना

जरूरी नागरिक सुविधाओं का क्रमिक विकास स्वाभाविक था। 1837 ई० में चाईबासा चैरिटेबल डिस्पेंसरी की स्थापना हुई। 1884 ई० में यह चाईबासा नगरपालिका के अधीन आई। चाईबासा में नगर पर्षद 1875 ई० से है। चाईबासा शहर नगर पर्षद के अन्तर्गत आता है। यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि डायन-हत्या को रोकने के लिए ही इस अस्पताल की स्थापना हुई थी। अगर लोग बीमार पड़ते थे, तो उनके मन में यह अंधविश्वास के लिए स्थान बना हुआ था। उनका मानना था कि अगर लोग बीमार पड़ते हैं और लंबे समय तक बीमार अवस्था में रहने के पश्चात उसकी मृत्यु हो जाती है तो उसे किसी बुरी शक्ति का प्रभाव या बुरी शक्ति के प्रभाव का शिकार मानते थे। उनका मानना था कि उन बुरी शक्ति की साधना कर कोई औरत डायन बनती है और अच्छे-भले लोगों को अपने बुरे शक्ति का शिकार बनाती है जिससे उसकी शक्ति में वृद्धि होती है। किसी औरत पर अगर शहर या ग्रामवासियों को शंका होती डायन होने पर तो उस शक बिनाह पर लोग बड़ी ही बेरहमी से लोग उन्हें मौत के घाट उतार देते। कोई [illegible] का विरोध तक नहीं जताते। इस प्रकार के अंधविश्वास व्याप्त होने पर

आखिर शहर की स्थिति कहाँ तक उन्नति या विकास कर पाती, इसी प्रकार की घटना को रोकने के लिए तथा नागरिकों को अंधविश्वास से बाहर निकालने तथा वास्तविकता से अवगत करवाने के चैरिटेबल डिस्पेंसरी की स्थापना की गयी। शुरुआत में तो लोगों को जागरूक करने तथा अंधविश्वास को छोड़ने में बहुत कठिनाई आयी। लोग झाड़-फूक, ओझा, फकीर में ज्यादा विश्वास करते थे, अर्थात् अगर कोई बीमार व्यक्ति को झाड़-फूक करवाते पर वह व्यक्ति स्वस्थ हो जाएगा ऐसी मान्यताओं के कारण लोगों का भी मानसिक स्तर पर विकास होना बहुत आवश्यक हो गया था। लोगों की विश्वास को हासिल करने के लिए डिसपेंसरी में लोगों का आना आवश्यक था। शुरुआत में तो लोग चिकित्सा स्थल पर जाना नहीं चाहते थे किन्तु धीरे-धीरे लोगों का विश्वास चैरिटेबल डिस्पेंसरी पर बढ़ने लगा। लोग अपना इलाज-दवाई आदि करवाकर ठीक होने लगे किन्तु फिर भी पूरी तरह से यह अंधविश्वास का सफाया नहीं हो पाया था, फिर भी अधिक-तर लोग अब अंधविश्वास को छोड़ चुके थे। इसके पश्चात् 1875 ई० में चाईबासा नगरपालिका का गठन हुआ। राँची के बाद यह छोटानागपुर की सबसे पुरानी नगरपालिका थी। कुछ बहुत सड़कों का निर्माण करवाया गया, कुछ नालियाँ, पानी टंकी आदि की व्यवस्था की जाने लगी, स्वच्छता संबंधी बातों पर ध्यान [illegible] 1891-92 में

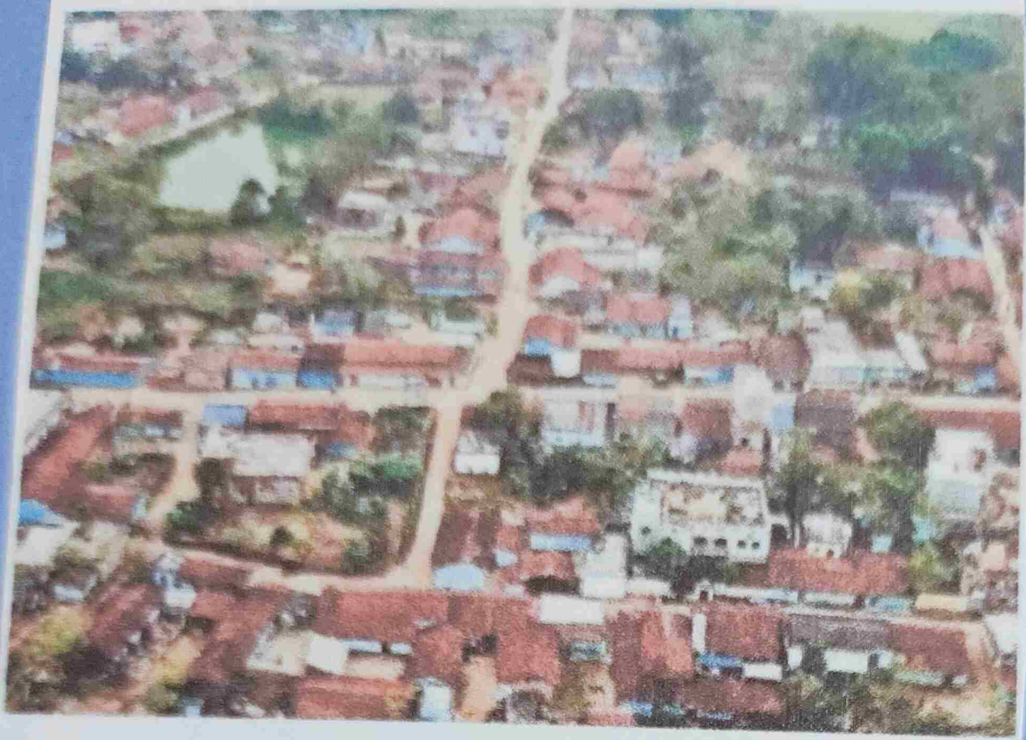
नगरपालिका ने रास्तों में रौशनी की व्यवस्था शुरु की, जिससे, शाम के बाद शहर का नजारा थोड़ा रौशन लगने लगा। लोग अब रात के अंधेरे में कहीं जाने-आने डरते नहीं थे। लोगों के लिए, बच्चों के लिए सभी के लिए रौशनी आने पर स्थिति बहुत सुविधाजनक हो गयी। लोग अब शहर में रौशनी आने पर बहुत खुश थे। रौशनी आने के पश्चात अब बिजली से चलने वाली बहुत-सी चीजें व्यवहार में आने लगी, अर्थात अब लोगों का विकास शनैः-शनैः होने लगा था। चाईबासा के विकास ने एक और नया मोड़ अब ले लिया था। शहर का नजारा अब धीरे-धीरे देखने लायक हो रहा था, रात के समय भी अब लोग सड़कों पर, चौराहों पर बातें करते हुए नजर आते थे।



पश्चिम सिंहभुम के इतिहास की झलक

तथा

चाईबासा न्यायपालिका के संबंध मैं

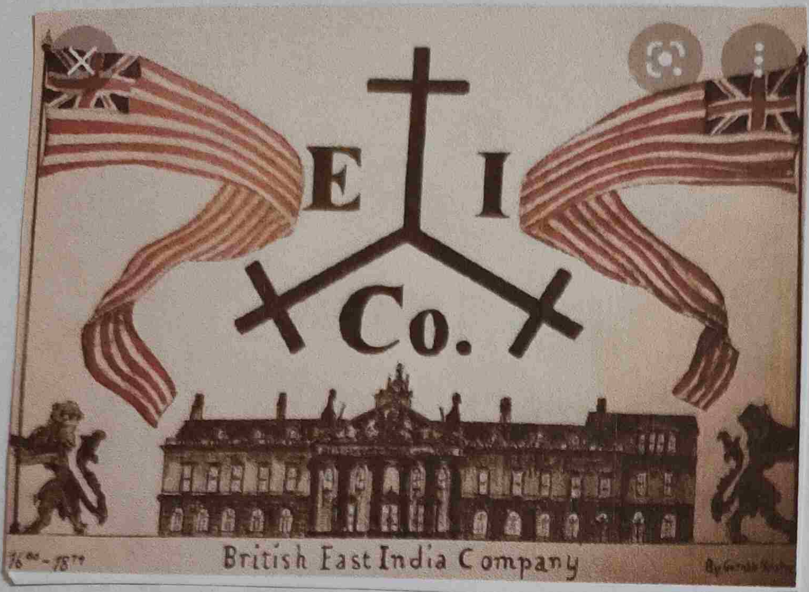


पश्चिमी सिंहभूम जिले के सोनुवा प्रखंड का पोड़ाहाट गांव प्राचीनकाल में सिंहभूम की राजधानी था।

पश्चिम सिंहभूम का इतिहास तथा चाईबासा न्यायपालिका के संबंध में

नाम 'सिंहभूम' यानि सिंहों की भूमि, संभवतः पोड़ाहार के राजाओं के संरक्षक से लिया गया है, जिन्हें सिंहभूम के राजाओं के रूप में भी जाना जाता था, लेकिन, दूसरी ओर 'हो' जनजाती के लोग इस तथ्य से इन्कार करते हैं और दावा करते हैं कि 'सिंहभूम' नाम इस क्षेत्र के आदिवासी लोगों के सर्वोच्च देवता 'सिंगबोंगा' शब्द से लिया गया है।

सिंहभूम में मिली ऐतिहासिक समृद्ध सभ्यता का प्रमाण :– सिंहभूम का इतिहास पुरापाषाण काल का है। चाईबासा में रोरो नदी के आधार और चक्रधरपुर में संजय नदी और कुछ सिक्कों मूर्तियों, बेनीसागर में खण्डहर मंदिरों चक्रधरपुर स्थित प्रसिद्ध केरा मंदिर जो राजा सिंह देव द्वारा स्थापित की गयी थी तथा पोड़ाहार के राजा के महल का अवशेष, जो उस काल के राजदार की वैभवता को दर्शाता है, आदि के कुछ पाषाण-युग के लेखों के निष्कर्ष तथ्य की गवाही देते हैं कि प्राचीन काल में यहां एक समृद्ध सभ्यता रही होगी इस जिले के भीतर के क्षेत्र में। आज भी ऐसे स्थल दर्शन करने योग्य है, इन स्थलों से हमारे पश्चिम सिंहभूम के ऐतिहासि[illegible] मिलता है


E
I
Co.
British East India Company

सिंहभूम के राजनीतिक जीवन की शुरुआत:-

इस क्षेत्र में राजनीतिक जीवन 7वीं शताब्दी ई० से शुरु हुआ जब पोरहाट के सिंह राजवंश ने पहली बार इस क्षेत्र से संपर्क किया और इसके बाद, राजवंश के दूसरे बैंच की स्थापना स्वर्गीय दुनारायण सिंह ने वर्ष 1205 ई० में की थी। शासक परिवार का दावा है कि वे राजस्थान के राठौर वंश के राजपूत थे। सरायकेला और खरसावाँ के शासक पोरहाट के मूल परिवार के केन्द्र थे। सिंहभूम के पूरे क्षेत्र पर इन राजवंशों के शासकों का शासन था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का सिंहभूम में प्रवेश तथा चाईबासा बना कोल्हान स्टेट का मुख्यालय:-

वर्ष 1765 ई० में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय से बंगाल प्रांत का दीवानी अधिकार प्राप्त करने के बाद, ईस्ट इंडिया कम्पनी को वर्तमान बिहार, बंगाल और उड़ीसा के क्षेत्र में राजस्व संग्रह की शक्ति मिली। सिंहभूम और छोटानागपुर बंगाल के निकट थे और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने राजस्व संग्रह के उद्देश्य से इन क्षेत्रों में प्रवेश किया, क्षेत्र में कोल आंदोलन के कारण, रामगढ़ बटालियन के ब्रिटिश कमांडेंट टी. विल्किंसन ने सोचा कि चुंकि ये क्षेत्र आदिवासी आंदोलनों के कारण पहले से ही परेशान हैं, इसलिए इसे सीधे ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा शासित किया

(17)

जाना चाहिए, इसलिए 1833 ई० के संकल्प 13 (XIII) के माध्यम से "साउथ वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी" जिसमें छोटा नागपुर का क्षेत्र शामिल था, बनाया गया और कैप्टन विल्किंसन को गवर्नर जनरल के प्रधान एजेंट के रूप में नियुक्त किया गया, लगभग उसी समय के दौरान पोरहट, सरायकेला और खरसावाँ क्षेत्र के कई गाँवों में 'हो' लोगों ने भी अपने स्थानीय शासकों के खिलाफ विद्रोह किया, जिसने इस क्षेत्र में ब्रिटिश अभियान का मार्ग प्रशस्त किया। स्थानीय शासकों ने कुछ संधियों में प्रवेश करके अंग्रेजों से मदद मांगी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सशस्त्र बलों ने इन क्षेत्रों में आक्रमण किया और अंत में सभी 'हो' गाँवों के मानकी और मुण्डाओं को आत्म-समर्पण करना पड़ा और वर्ष 1837 ई० में विल्किंसन के साथ एक संधी करनी पड़ी और फिर वर्ष 1837 ई० में, 'कोल्हान सेपरेट एस्टेट' का गठन हुआ जिसमें 'हो' के प्रमुख को आत्मसात किया गया, मयूरभंज, पोरहट, सरायकेला और खरसावाँ क्षेत्र के गाँवों को 'साउथ वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी' में शामिल किया गया था। साउथ वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी के एजेंट टी. विल्किंसन के तहत "सहायक राजनीतिक एजेंट" के पद पर एक नया अधिकारी नियुक्त किया गया था। चाईबासा, कोल्हान एस्टेट का मुख्यालय बन गया। पीर (गाँवों का एक समूह) और मुण्डाओं (ग्राम प्रधानों) के मुखिया, मनकी को अपने-अपने क्षेत्र में प्रशासन के

लिए जिम्मेदार बनाया गया था, विल्किंसन द्वारा वर्ष 1834 ई॰ में, दक्षिण पश्चिम सीमांत एजेंसी के प्रशासन के लिए तैयार किए गए नागरिक नियम, जिसे "विल्किंसन नियम" के रूप में जाना जाता है, को भी वर्ष 1837 ई॰ में कोल्हान में पेश किया गया था।

सिंहभूम क्षेत्र की पुनर्व्यवस्था तथा बदला गया एजेंसी का नाम :— बाद में, इस क्षेत्र को फिर से 1854 के अधिनियम XX द्वारा पुनर्व्यवस्थित किया गया था, दक्षिण पश्चिम सीमा एजेंसी का नाम बदलकर 'कमीशनरी' कर दिया गया था और राजनीतिक एजेंट को आयुक्त और सहायक राजनीतिक एजेंट को उपायुक्त के रूप में नामित किया गया था। उपायुक्त को सभी कार्यकारी और न्यायिक शक्तियाँ निहित थीं,

विद्रोह के पश्चात कोल्हान में बनाया गया अधीक्षक का पद :— 1857 ई॰ के विद्रोह के बाद कोल्हान अधीक्षक का पद भी बनाया गया था, कोल्हान अधीक्षक को सिविल, राजस्व और अपराधिक मामलों के संबंध में कोल्हान के प्रशासन में उपायुक्त की सहायता के लिए नियुक्त किया गया था। उपायुक्त ने छोटानागपुर के आयुक्त की देखरेख में सरायकेला और खरसावाँ राज्यों पर भी नियंत्रण का प्रयोग किया, उन्होंने उन राज्यों के लिए सहायक सत्र न्यायाधीश के रूप में

भी काम किया और प्रमुखों के आदेशों के खिलाफ़ अपीलों की सुनवाई करते थे।

सिंहभूम के न्याय क्षेत्र तथा उनके कार्य :- सिंहभूम का क्षेत्र 08 मार्च 1910 ई० तक बाँकुड़ा के सत्र न्यायाधीश के क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र में रहा। प्रधान न्यायिक अधिकारी बाँकुरा के सत्र न्यायाधीश थे, जिन्हें 1904 ई० में छोटानागपुर के लिए अतिरिक्त अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था और शक्ति के साथ निहित किया गया था, इस जिले और मानभूम के भीतर उत्पन्न होने वाले सभी सत्र मामलों और आपराधिक अपीलों का प्रयास किया गया, उनके द्वारा पुरुलिया और आपराधिक अपीलों में या तो पुरुलिया या बाँकुरा सत्र मामलों की सुनवाई की गई, तो उनके त्वरित निपटान के लिए सबसे सुविधाजनक था। स्थानीय आपराधिक न्यायालयों में डिप्टी मजिस्ट्रेट और चार मानद मजिस्ट्रेट शामिल थे। उनमें से तीन मजिस्ट्रेट चाईबासा में और एक मजिस्ट्रेट चक्रधरपुर में अपना न्यायलय आयोजित करते थे। एक अधीनस्थ न्यायाधीश नियुक्त किया गया था, जो मानभूम के अधीनस्थ न्यायाधीश भी थे। इसी तरह एक मुंसिफ थे, जो पुरुलिया के मुंसिफ भी थे। उपायुक्त भी अधीनस्थ न्यायाधीश थे।

तीन जिलों को मिलाकर बना सिविल जिला :-

वर्ष 1910 ई॰ में, संभलपुर, सिंहभूम और मानभूम जिलों को मिलाकर एक अलग सिविल जिला और सत्र डिवीजन बनाया गया था, इसका नाम 'मानभूम - सम्भलपुर जजशिप' रखा गया। मानभूम - संभलपुर के न्यायालय के न्यायाधीश सिंहभूम और मानभूम जिले में उत्पन्न होने वाले मामलों के निपटान के लिए पुरुलिया में, संभलपुर जिले में उत्पन्न होने वाले मामलों के निपटान के लिए संभलपुर में अपनी बैठक करते थे।

सिंहभूम न्यायक्षेत्र का बढ़ाया गया क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र :- वर्ष 1936 ई॰ में उड़ीसा प्रांत के निर्माण के बाद, संभलपुर जिले को उड़ीसा राज्य से जोड़ा गया और मानभूम जिला बिहार में बना रहा और इस तरह 'मानभूम - सिंहभूम जजशिप' के रूप में एक अलग जजशिप का गठन किया गया। वर्ष 1948 ई॰ में सरायकेला और खरसावाँ राज्यों का सिंहभूम जिले में विलय हो गया तथा उसके पश्चात मानभूम और सिंहभूम न्यायक्षेत्र का क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र इस क्षेत्र तक भी बढ़ा दिया गया। वर्ष 1949 ई॰ में सिंहभूम के अधीनस्थ न्यायाधीश के न्यायालय का क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र चाईबासा में मुख्यालय के साथ सरायकेला और खरसावाँ के क्षेत्रों तक बढ़ा दिया गया था। सिंहभूम के अधीनस्थ न्यायाधीश जमशेदपुर में भी बैठते थे।

पुनर्गठन के पश्चात् न्यायालयों की स्थिति :-

1956 ई० में राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात पुरुलिया का बंगाल में विलय हो गया और सिंहभूम तत्कालीन बिहार राज्य का हिस्सा बना रहा और धनबाद के जिला और सत्र न्यायाधीश को सिंहभूम क्षेत्र का प्रभार भी सौंपा गया। हालांकि, दो-उप-न्यायाधीशों और तीन मुंसिफ की अदालतें तब सिंहभूम के क्षेत्र में होने वाले मामलों की सुनवाई और निपटान के लिए काम कर रही थीं और धनबाद के जिला और सत्र न्यायाधीश कभी-कभी चाईबासा, जमशेदपुर और सरायकेला में सर्किट कोर्ट आयोजित करते थे। अन्य न्यायिक अधिकारी भी सर्किट कोर्ट लगाते थे।

सिंहभूम का न्याय आया अस्तित्व में :- अंत में, 1960 ई० के 04वें दिन, सिंहभूम का न्याय अस्तित्व में आया और श्री महेन्द्र प्रसाद वर्मा को यहाँ प्रथम जिला और सत्र न्यायाधीश, सिंहभूम (वर्तमान में पश्चिमी सिंहभूम, चाईबासा के जजशिप के रूप में स्टाइल) के रूप में तैनात किया गया, जिसका मुख्यालय चाईबासा में है। इस जजशिप में अब तक 32 (बत्तीस) जिला एवं सत्र न्यायाधीशों की पदस्थापना की जा चुकी है। अब जिला एवं न्यायाधीश के पद को प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में नामित किया गया है। श्री [illegible] इस समय

चाईबासा में पश्चिमी सिंहभूम के न्यायाधीश पद के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर पदस्थापित हैं।

निष्कर्ष :— निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सिंहभूम का इतिहास बहुत ही व्यापक रहा है। पुरातन ऐतिहासिक स्थलों में मिली अवशेषों को देखकर ज्ञात होता है कि सिंहभूम की सभ्यता अत्यंत समृद्ध थी। सिंहभूम के राजाओं तथा उनके राजपाट की स्थिति पुराने महलों से लगाया जा सकता है। सिंहभूम की राजनीतिक जीवन की शुरुआत में शासक इस क्षेत्र के संपर्क में आए तथा यहाँ के इतिहास को गौरवशाली बनाया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रवेश काल से सिंहभूम के न्याय अस्तित्व में आने तक का काल व्यापक रहा। अंग्रेजों का, हो लोगों का विद्रोह, न्याय क्षेत्र सिंहभूम के अधिकार क्षेत्र में आना आदि महान घटनाओं से हमारा सिंहभूम का अस्तित्व जुड़ा हुआ है। सिंहभूम में जो सभ्यता एवं संस्कृति हमें विरासत के रूप मिली है, उस धरोहर को हमें सदैव संजोए रखना चाहिए। आखिर इसी से हमारे चाईबासा शहर को पहचान मिली है।

चाईबासा के ऐतिहासिक भवन

कलेक्ट्रेट कार्यालय का इतिहास

Rediscovering Jharkhand's legacy of colonial buildings



The official residence of the Deputy Commissioner of Chaibasa, in West Singhbhum district, Jharkhand, dates back to the 1850s.

classmate
Date :
Page :

चाईबासा का ऐतिहासिक भवन कलेक्ट्रेट कार्यालय का इतिहास

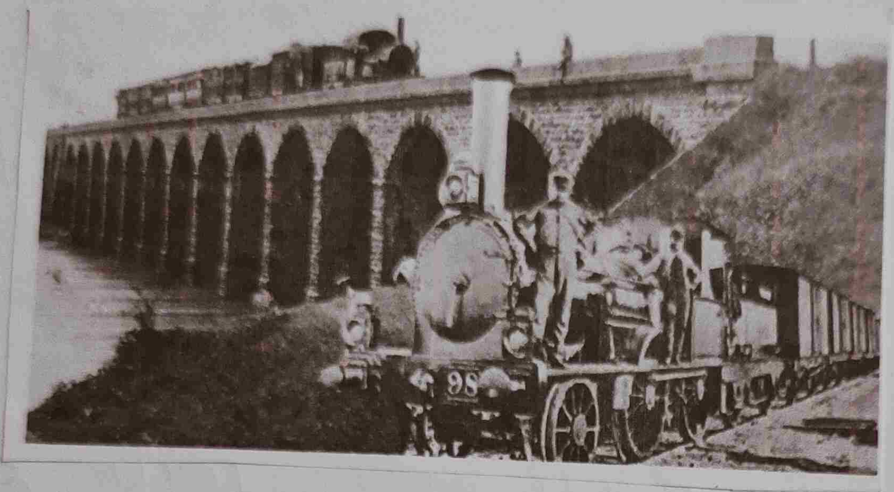
पश्चिमी सिंहभूम जिले के वर्तमान चाईबासा में औपनिवेशिक भवनों में ब्रिटिश काल का अद्भुत रूप से उदय हुआ है। 'हो' लोगों द्वारा बार-बार होने वाले विद्रोह ने, अंग्रेजों को पारंपरिक प्रमुखों को प्रस्तुत करने के लिए मजबूर करने की निरर्थकता का एहसास कराया और अंततः क्षेत्र पर ब्रिटिश कब्जे का नेतृत्व किया, तत्कालीन उपायुक्तों के नाम के साथ, एक लकड़ी की पट्टिका वर्तमान डीसी के बंगले को 1850 के दशक की है। विशाल एकल-मंजिला संरचना में एक साधारण सममित लेआउट है; चौड़े स्तंभयुक्त बरामदे जो मुख्य दीवारों को बाहर की गर्मी से बचाते है, प्राकृतिक वेंटिलेशन और प्रकाश सुनिश्चित करने के लिए, ऊँची छतें, कई दरवाजे और खिड़कियाँ, कोयले से चलने वाली चिमनी तथा पॉलिश किए गए सीमेंट के फर्श अभी भी स्थानों में दिखाई देते हैं। चाईबासा में अन्य उल्लेखनीय संरचनाएं जो इस अवधि से पहले की है, उनमें वर्तमान सर्किट हाउस शामिल है, जो कम्पनी के शासन के दौरान एक डाक बंगले के रूप में कार्य करता था, आज का कलेक्टर कार्यालय, जो एक सिविल कोर्ट के रूप में कार्य करता था।

चाईबासा में खनिजों
की हुई खोज
एवं
विदेशी कम्पनियों का
हुआ आगमन

चाईबासा में खनिजों की खोज एवं विदेशी कम्पनियों का हुआ आगमन

समय के साथ-साथ चाईबासा शहर में हाट की स्थापना हुई। लोग अपनी जरूरतों की चीजें तथा व्यापार संबंधी सामग्रियों के लिए हाट लगने का इंतज़ार करते थे। हाट में शहरवासियों तथा ग्रामवासियों का अच्छा-खासा जमावड़ा लगा रहता था, वहाँ सस्ती चीजें मिलने के कारण शहरवासियों की जरूरतों की पूर्ति सुविधाजनक होती गयी, हाट में सभी प्रकार की वस्तुओं का क्रय-विक्रय किया जाता था। चाईबासा अब हाट में रुचि लेने लगा था।

दूसरी तरफ़ चाईबासा तसर, लाह एवं खनिजों के कारोबार का प्रमुख केन्द्र बना, सिंहभूम जिला अपनी वनज सम्पदा के लिए मशहूर रहा, जिले की मिट्टी को तीन समूह में वर्गीकृत किया गया है- रॉकी मिट्टी, लाल मिट्टी तथा काली मिट्टी, रॉकी मिट्टी अधिकतर जिले के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर-पश्चिम हिस्सों में पाया जाता है। जिले के शेष हिस्से में लाल मिट्टी फैली हुई है। काली मिट्टी ज्यादातर निचले इलाकों में पाए जाते हैं। समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण पश्चिम सिंहभूम जिला खनिज और वन सम्पदा के लिए विश्व प्रसिद्ध है। डेपुटी कंजरवेटर ऑफ फारेस्ट एवं असिस्टेंट कंजरवेटर ऑफ फारेस्ट जैसे उच्च पदाधिकारियों के द्वारा वन प्रशासन [illegible] जाता था। वन सम्पदा



ने चाईबासा के महत्व को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाया, २०वीं सदी के प्रारंभ से लौह अयस्क, क्रोमाइट, मैंगनीज़, सभी खनिजों की खोज होते ही देशी-विदेशी कम्पनियों का चाईबासा में आगमन होने लगा। इतनी बहुमूल्य या अमूल्य खनिजों का यहाँ की मिट्टी के गर्भ में पाया जाना एक बहुत बड़ी उपलब्धि के रूप में सामने आयी। इस भूमि में अब लोग यहाँ पर अपना पदस्थापन होना सजा मिलने के बराबर मानते थे, उन्हें यह बात की अंदेशा तक नहीं था कि मिट्टी के मिट्टी के गर्भ में इतना अभूतपूर्व खनिज समाए हुए है जो शहर को अपने यश से गौरांवित करेगा। विदेशी लोगों का आगमन अब इस छोटे से शहर में होने लगा, कारण- यहाँ की धरती में दबा हुआ खनिज जो कि २०वीं सदी में इसका खोज हुआ था। विश्व के खनिज मानचित्र में सुनहरे अक्षरों में चाईबासा का नाम लिखा गया। यहाँ की मिट्टी ने पूरे विश्व में स्वयं को गौरांवित किया। अब चाईबासा केवल हाट-बाजार वाला छोटा-सा शहर नहीं रहा बल्कि सम्पूर्ण विश्व को बताने वाला वह शहर बन गया जिसके मिट्टी के तले खनिज का खजाना छुपा हुआ था। चाईबासा के लिए यह अत्यंत गौरवपूर्ण और इस प्राकृतिक संसाधन के देन के लिए चाईबासा अपने आप में विशेष महत्व रखने वाला धन्य शहर है।

19वीं - 20वीं सदी के

उत्तरार्द्ध

आधुनिक सड़कों का

हुआ निर्माण

तथा

सुविधाजनक हुई आवागमन

19वीं-20वीं सदी के उत्तरार्द्ध आधुनिक सड़कों का हुआ निर्माण, सुविधाजनक हुई आवागमन

1891-92 ई० में नगरपालिका ने रास्तों में रौशनी की व्यवस्था शुरू की। नगरपालिका के गठन के पश्चात सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए योजनाएँ बनाने का कार्य एवं उसे क्रियान्वित करने के लिए तैयारी शुरू की जा रही थी। नगरपालिका के गठन के पश्चात समाज में पिछड़े अनुपिछड़े लोगों एवं विकलांगों, मानसिक रूप से विचित्र लोगों के हितों की भी रक्षार्थ उपाय किए जाने लगे। तत्पश्चात सबसे अहम चीजे — सड़क, रौशनी, पेयजल, जनगणना आदि की भी व्यवस्था की पहल हो चुकी थी।

आधुनिक सड़कों के निर्माण होते ही राँची, पुरुलिया, बाँकुड़ा जैसे शहरों से चाईबासा जुड़ता गया। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में चक्रधरपुर होते हुए रेल सेवा शुरू हुई। महात्मा गाँधी ने चक्रधरपुर रेलवे स्टेशन की अपनी यात्रा का उल्लेख पुस्तक 'थर्ड क्लास इन इंडियन रेलवे' में किया गया है। अर्थात रेलवे सुविधा असंतोषप्रद थी। सरकार का ध्यान खनिज एवं वनज संपदा की ढुलाई की ओर ज्यादा था। यात्री-सवारी की समुचित व्यवस्था नहीं थी। इसलिए आवागमन एक विकट समस्या थी। चक्रधरपुर चाईबासा के 25 किलोमीटर दूर उत्तर में स्थित है। 1890 ई० बंगाल-नागपुर रेल सेवा

शुरु होने के साथ ही चक्रधरपुर रेलवे क्रासिंग पर गेट नम्बर 1771 की स्थापना हुई थी। चाईबासा से आवागमन बहुत कष्टप्रद थी। चक्रधरपुर में रेल सेवा होने के कारण लोगों (चाईबासा) को चक्रधरपुर की दूरी 25 किलोमीटर की यात्रा तय कर रेल सेवा मिल पाती थी। यहाँ से सीधे आवागमन की सुविधा नहीं थी। लम्बी यात्रा के लिए चाईबासा के लोगों को पहले चक्रधरपुर पहुँचना पड़ता था, 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में या अंत तक में आमदा-जामदा रेल लाईन के निर्माण के साथ रेल विभाग के मानचित्र में चाईबासा को जगह मिली, इतने जद्दोजहद के पश्चात आखिर चाईबासा में रेल सेवा शुरु हुई। 20वीं सदी से चाईबासा में (1) टाटा - गुआ, पैसेंजर, (2) टाटा-बड़बिल, पैसेंजर, (3) टाटा-गुआ, डीएमयू, (4) बड़बिल - विशाखापट्टनम, एक्सप्रेस (साप्ताहिक) (5) हावड़ा - बड़बिल, जनशताब्दी, (6) टाटा-कुचिगुड़ा, स्पेशल (साप्ताहिक) ट्रेनें चलती है। फिर भी, अब भी स्थिति में बहुत-सी सुधारें नहीं हुई है। चाईबासा स्टेशन में 2015 को चाईबासा रेल मण्डल प्रबंधक राजेन्द्र प्रसाद द्वारा शिलान्यास के 4 वर्षों पश्चात भी जस की तस स्थिति है। 2019 तक चाईबासा स्टेशन में खाने-पीने का एक भी स्टॉल नहीं था, विकलांगों के लिए व्हील चेयरों कमी थी। स्टेशन पर नहीं था टिकट मशीन साथ ही रेलवे यात्रियों को मूल सुविधा भी मुहैया करवाने में विफल साबित हो रही थी। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 18वीं-19वीं सदी तक चाईबासा को विकसित करने के लिए जो भी प्रयास किए गए, वह [illegible] सफल हो पायी, किन्तु पूरी तरह [illegible] नहीं हो पायी।

साम्राज्यवादी एवं उपनिवेश
की जरूरतों को
पुरा करने हेतु शुरू
की गई नगरायण
की प्रक्रिया

सामाज्यवादी एवं उपनिवेशवादी जरूरतों को पूरा करने के लिए शुरू की गई नगरायण की प्रक्रिया

सामाज्यवादी - उपनिवेशवादी जरूरतों को पूरा करने के लिए शुरू की गई नगरायण की यह प्रक्रिया। लेकिन नगरायण की इस प्रक्रिया में अपनी अंतर्निहित खामियों की यह रही सरकार की नजर में चाईबासा तथा सिंहभूम जिले का दृश्य अत्यंत नगण्य था। नीतियों का निर्धारण कलकत्ता, बाद में पटना एवं राँची से होता था, जिन्हें चाईबासा के स्थित पदाधिकारी मात्र कार्यान्वित करते थे। अर्थात नीतियों के निर्धारण मुख्य रूप से कलकत्ता आदि स्थानों से होता था। न्याय के मामले में भी राँची ने अपना स्थान बना रखा था, राँची का स्थान तब समाप्त हुई न्याय के मामले में, जब 1960 ई० के दशक में इस शहर में जिला जज की अदालत बन गयी। जब तक अदालत नहीं बनी थी अर्थात 1960 ई० के दशक के पहले यानि पूर्व तक राँची न्याय के मामले में बनी रही।

चाईबासा में हुई शिक्षण संस्थानों की स्थापना


lutheran middle school chaibasa


एस.पी.जी. मिशन उच्च विद्यालय चाईबासा
स्थापित:1956


नगरपालिका बंगला मध्य विद्यालय
A MAN IS GREAT BY DEEDS
NOT BY BIRTH

चाईबासा में हुई शिक्षा संस्थानों की स्थापना

1851 ई० में अंग्रेजी-हिन्दी विद्यालय का निर्माण चाईबासा में हुआ। 1865 के दशक में यहाँ जिला स्कूल+2 की स्थापना हुई। एस० पी० जी० मिशन स्कूल, लुथेरन मिशन स्कूल, रामगोपाल सेन बालिका विद्यालय, मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय आदि शुरु हुए बाद में एम० एल० खमारा विद्यालय, सरकारी कन्या विद्यालय आदि की स्थापना हुई। शहर की आबादी मूलतः पड़ोस के जिलों एवं प्रांतों के लोगों से बनी थी। ये हिन्दी बंगला, उड़िया, उर्दू भाषी थे, एक उड़िया स्कूल की भी स्थापना हुई थी, जो कि मिसरीलाल जैन ब्लाक में आज भी मौजूद है एवं इस विद्यालय में चाईबासा का नाम चारिबासा लिखा हुआ है। इससे यह ज्ञात होता है कि यह विद्यालय अत्यंत पुराना है। टाय कॉलेज की स्थापना 1954 ई० में हुई। यह कॉलेज झारखण्ड राज्य के पश्चिमी सिंहभूम जिले के सबसे पुरानी डिग्री कॉलेजों में से एक है। शहर के पड़ोस-प्रांतों एवं जिलों के लोगों से बनी चाईबासा शहर की अलग-अलग भाषी लोगों ने ही यहाँ राममोहन राय लाइब्रेरी, उर्दू लाइब्रेरी गोशाला, टाउन क्लब आदि बनाए। आदिवासी बहुल क्षेत्र में एक बहुभाषी संस्कृति का केन्द्र पनपने लगा।

जिला स्कूल +2 के विषय में :— जिला स्कूल +2 की स्थापना 1865 ई० में हुई थी और इसका प्रबंधन शिक्षा विभाग द्वारा किया जाता है यह चाईबासा के शहरी क्षेत्र में स्थित है। यह झारखण्ड के पश्चिम सिंहभूम जिले के सदर, चाईबासा ब्लॉक में स्थित है। स्कूल में 9वीं से 12वीं तक के ग्रेड होते हैं। स्कूल सह-शैक्षिक है और इसमें पूर्व-प्राथमिक खण्ड संलग्न नहीं है। स्कूल गैर-आश्रम प्रकार (सरकारी) प्रकृति में है और स्कूल की इमारत को शिफ्ट-स्कूल के रूप में उपयोग नहीं कर रहा है। इस विद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। यह स्कूल हर मौसम में सड़क मार्ग से पहुँचा जा सकता है। इस स्कूल में शैक्षणिक सत्र अप्रैल में शुरु होता है। जिला स्कूल में बहुत बड़ा-सा मैदान है, जिसमें स्कूल के विद्यार्थी और आस-पड़ोस में रहने वाले बच्चे तथा नवयुवक तरह-तरह खेलों का अभ्यास करते है।

टाटा कॉलेज के विषय में :— टाटा कॉलेज, झारखण्ड राज्य के पश्चिमी सिंहभूम जिले के सबसे पुराने डिग्री कॉलेजों में से एक है। यह कला और विज्ञान में स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रदान है। कॉलेज में 19 विभाग है जो इन कार्यक्रमों की पेशकश करते है। यह कोल्हान विश्वविद्यालय से

संबद्ध है।

स्थान :— टाटा कॉलेज, पश्चिमी सिंहभूम जिले के चाईबासा में बाईपास रोड पर स्थित है। यह स्थान झारखण्ड के सभी प्रमुख स्थानों से सड़क मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। कोल्हान विश्वविद्यालय और पश्चिमी सिंहभूम के जिला प्रशासनिक कार्यालय, दोनों कॉलेज परिसर से सटे हुए हैं। कैम्पस में विशाल मैदान है जिसमें विद्यार्थी खेलकूद का भी अभ्यास करते हैं। अब टाटा कॉलेज की बनावट में बहुत बदलाव आ गया है, पहले की तुलना में यह काफी विकसित हो चुका है, विद्यार्थियों की अच्छी पढ़ाई के लिए विशाल हॉल तथा कक्षाएँ काफी उन्नत रूप से बनायी गयी है, सभी स्थानों पर शौचालय, पेयजल, तथा रोशनी की व्यवस्था भी की गयी है। विद्यार्थिगण कुछ-कुछ कार्यक्रमों में सांस्कृतिक नृत्य, गायन तथा सुविचार भी प्रस्तुत करते हैं। यहाँ के प्रधानाचार्य, शिक्षक, शिक्षिकाएँ तथा सहभागी कर्मचारीगण भी बहुत ही अच्छे तथा सहयोगी हैं। दीक्षांत समारोह का कार्यक्रम यहाँ बहुत भव्य रूप से मनाया जाता है।

इतिहास :— टाटा कॉलेज की स्थापना 27 जनवरी, 1954 ई० को हुई थी। 1961 तक, यह कॉलेज पटना विश्वविद्यालय की एक घटक इकाई थी। यह कालेज वर्ष 1961 में रांची विश्वविद्यालय की एक संविधान इकाई बन गया। 2009 में चाईबासा में कोल्हान विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ, कालेज विश्वविद्यालय की एक घटक इकाई बन गया।

20वीं सदी कै प्रथम मैं

चाईबासा बना

हैं पैनिंग टाउन

20वीं सदी के प्रथम में चाईबासा बना हैपेनिंग टाउन

इस तरह सरकारी प्रधान कार्यालय, व्यापार, वनज एवं खनिज संपदा के लिए 20 वीं सदी के प्रथम दशक से ही चाईबासा एक निहायत "हैप्पेनिंग टाउन" बनता गया। शुरुआत में जो चाईबासा की स्थिति थी अर्थात् जीवनहीन शहर उससे विकसित होकर चाईबासा अब एक जीवन्त शहर के रूप में परिवर्तित हो चुका था। चारों ओर से लोग यहा आते गए तथा बसते गए। शहर की आबादी जो कि 02% भी नहीं थी, अब आबादी बढ़ने और निरंतर बढ़ने लगी। गांवों से घिरा यह शहर आस-पड़ोस के ग्रामवासियों के लिए अत्यंत आकर्षक और उपयोगी था। क्योंकि नगरपालिका की गठन के पश्चात शहर क्रमशः विकास की ओर अग्रसर हो चुका था। सड़के आधुनिक बनने लगी थी। रौशनी की सुविधा भी शहर में आ चुकी थी। पेयजल की भी समस्याएँ अब धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। अस्पतालों की स्थापना होने पर लोगों का अर्थात बीमार लोगों का सही से इलाज हो रहा था तथा लोग अब अंधविश्वास से दूर जा रहे थे। यहाँ के दफ्तरों, कचहरियों, अस्पताल, स्कूलों, दुकानों एवं मंगला हाट का नजारा तो अब देखने लायक हो रहा था। [illegible] हाट को देखने के लिए आस-पड़ोस के [illegible] उत्साह बेहद इंतजार

classmate
Date :
Page :

करने लायक एक उत्सव था। मंगला हाट का इतिहास तो बहुत पुराना रहा है। लोगों में इस हाट-बाजार को देखने तथा सामानों की खरीददारी करना बेहद रोचक था, यह चाईबासा के बस स्टैंड वाले रोड के किनारे लगती है (अभी तक), यह हाट प्रत्येक मंगलवार को लगती है। इस हाट बाजार में तरह-तरह की वस्तुएं देखने को मिलती थी और अभी भी हरी सब्जियां, मांस-मछली, घरेलू उपयोग की वस्तुएं, साज-श्रृंगार की सामग्री आदि सभी चीजें बहुत कम कीमतों पर मिलती है। सुंदर का बाजार देखने लायक होता है। हाट लगने का स्थान विशाल है अतः उस समय यह एक मेला के समान होता था, जिसे आस-पड़ोस के ग्रामवासी बेहद उत्साहपूर्वक देखने और सामग्रियों की खरीददारी करने आते थे। स्कूलों की स्थापना के पश्चात् अब निरक्षरता का स्थान साक्षरता ने लेना आरंभ कर दिया था। बच्चे विद्यालयों में जाकर शिक्षित हो रहे थे, तथा दकियानूसी एवं पिछड़े सोच-विचारों से मुक्त होने लगे थे। लोगों में अब साक्षरता का होना आवश्यक है, यह विचार आने लगी थी। एवं दफ्तरों आदियों में अब कर्मचारियों का आना-जाना लगा रहता था, रास्तों पर चहल-पहल रहती थी और चाईबासा शहर ने एक जीवन्त शहर का रूप ले लिया था।

स्वाधीनता के पश्चात चाईबासा बना आकर्षण का केन्द्र

realme Shot by Moumita Dutta
2022/07/07 23:30

स्वाधीनता के पश्चात् चाईबासा बना आकर्षण का केन्द्र

स्वाधीनता के बाद शहर में बिजली एवं पानी की आपूर्ति होने लगी, शहर में बिजली की आपूर्ति होने से शहर में चहल-पहल दिखने लगी। रात में अंधेरे में डूबने वाला शहर रोशन दिखने लगा, चोर, लुटेरे, अपराधियों के घटनाएं पहले से थोड़ी कम घटने लगी। शहर में प्रशासनिक सुविधाओं के कारण अब शहर चौकन्ना रहने लगा। जिला जज अदालतों के अलावा अन्य अदालतें भी बनी। अब शहर के कोर्ट में अस्त-व्यस्तता दिखती थी। पानी की आपूर्ति होने से शहर के लोगों में पानी की समस्याएँ धीरे-धीरे खत्म होने लगी थी। लोगों को अब नदी, तालाबों तथा कुओं के पानी पर निर्भर नहीं रहना पड़ा, अनेक सरकारी विभाग खोले गए, उनमें सरकारी कार्यों को क्रियान्वित किए जाने लगे। निम्न एवं उच्च विद्यालयों की संख्या बढ़ी। साक्षरता बढ़ने लगी एवं पिछड़े सोच-विचारों तथा अंध-विश्वासों का अंत होने लगा। कालेज एवं स्नातकोत्तर शिक्षा केन्द्र की स्थापना हुई। शहरवासी अब उच्च शिक्षा ग्रहण करने लगे इन सुविधाओं की पूर्ति होने के कारण बाहर के लोगों के चाईबासा में बसने की प्रक्रिया में तेजी से वृद्धि हुई। चाईबासा की आबादी तेजी से बढ़ने लगी। शुद्ध, हवा, पानी, सड़क सुविधा, मनोरम प्राकृतिक परिवेश के लिए शहर एवं जिला पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना रहा चाईबासा।

चाईबासा एवं आस-पास

कै क्षैत्र में हैं

आकर्षक पर्यटक स्थल

चाईबासा के दर्शनीय पर्यटक स्थल

चाईबासा तथा चाईबासा के आस-पास पुरे पश्चिम सिंहभूम के अंतर्गत अनेक ऐतिहासिक स्थल तथा पर्यटक स्थल हैं। चाईबासा जैसे पहाड़ों, नदियों एवं हरे जंगलों से घिरे शहर में, न जाने कितने ही ऐसे दर्शनीय स्थल मौजुद हैं। आइए, हम उनको पर्यटक स्थलों के विषय में कुछ जाने जो ऐतिहासिक तथा पौराणिक स्थल के रुप में विद्यमान है।

शहीद पार्क, चाईबासा :— चाईबासा का शहीद पार्क नया बनाया गया है, जिसका प्रबंधन झारखण्ड सरकार द्वारा किया जाता है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता को निहारने के लिए आगंतुकों के लिए यह एक अद्भुत क्षेत्र है। पश्चिमी सिंहभूम में छुट्टियों के दौरान, आप अपने प्रियजनों के साथ इस पार्क में अपना समय बिता सकते हैं। यहाँ शहीदों के स्मरण हेतु वहाँ स्मारक तथा बच्चों के खेलने के लिए झूले, फिसलन आदि तथा बूढ़ों के बैठने के लिए स्थान तथा सुन्दर से फूलों के द्वारा सजे इस पार्क में बगीचे बनाए गए हैं। यह का दृश्य मन हरने योग्य है।

बिदरी :— बिदरी चाईबासा से 32.5 किलोमीटर दूर मंझारी प्रखण्ड में स्थित है। इसके बाहरी इलाके में एक छोटी-सी झील है, साथ ही, पूर्व में

एक पहाड़ी ताला भी है। झील के पश्चिम में स्थित कुडलैण्ड डाक बंगला में एक सुंदर सुरम्य दृश्य है। ठाकोरा जलप्रपात लगभग 6 किलोमीटर दूर है।

चैनपुर :– यह गाँव चक्रधरपुर ब्लॉक में स्थित है और अपने प्रसिद्ध पौराणिक शिव मंदिर के लिए जाना जाता है। चाईबासा से इसकी दूरी 26 किलोमीटर है। शिव चतुर्दशी और चैत्र संक्रांति के अवसर पर प्रत्येक वर्ष (महीना - अप्रैल) बड़े मेलों का आयोजन किया जाता है।

हिरनी जलप्रपात :– यह जलप्रपात चाईबासा से 66.6 कि.मी. तथा चक्रधरपुर से 40 कि.मी. दूरी पर राँची - चाईबासा मार्ग पर स्थित है। यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है।

जगन्नाथपुर का शिव मंदिर :– जगन्नाथपुर चाईबासा से 45 कि.मी दक्षिण - पश्चिम में स्थित है। गाँव के संस्थापक पोरहाट के राजा जगन्नाथ सिंह ने इस नाम को प्रेरित किया। इसमें एक प्राचीन शिव मंदिर दर्शनीय है।

जोजोहातु का खनिज खदान :– यह स्थान चाईबासा से 22 कि.मी पश्चिम में जंगलों के बीच में स्थित है, यह सिंहभूम क्रोमाइट्स कम्पनी और टिस्को द्वारा संचालित अपने क्रोमाइट भण्डार और लौह - अयस्क खदानों के लिए प्रसिद्ध है।

केरा :- यह स्थान चाईबासा से 35.5 कि.मी तथा चक्रधरपुर के ब्लॉक मुख्यालय से लगभग 10 कि.मी उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह स्थान चैत्र-संक्रांति के सम्मान में आयोजित अपने वार्षिक तीन दिवसीय मेले के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में भगवती मंदिर बड़ी संख्या में पर्यटकों तथा तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है।

कोरगढ़ :- यह स्थान जगन्नाथपुर प्रखंड में स्थित है। चाईबासा से इसकी दूरी 137.9 कि.मी है। स्थानीय लोगों के अनुसार, यह अत्यधिक मजबूत भारतीय राजाओं का मुख्यालय था। जिनका नियंत्रण जगन्नाथपुर, मंझारी, मझगांव तथा चक्रधरपुर के क्षेत्रों पर बमुश्किल एक सदी पहले फैला था। राजवंश के अंतिम सम्राट नरपत सिंह के बारे में बताया जाता है कि उन्होंने कोरगढ़, जगन्नाथपुर और जयंतगढ़ में गढ़ बनाए थे।

लुपुंगुटु, चाईबासा :- यह चाईबासा से लगभग 2 कि.मी. पश्चिम में स्थित एक छोटी-सी स्थल है। इसमें एक प्राकृतिक झरना है जो एक पसंदीदा पिकनिक स्थल है। झरना का जल औषधियों गुणों से भरा है। वृक्षों के जड़ से निकले झरने का जल चर्म रोगों में फायदेमंद है। ठंड के दिनों में इस झरने का जल स्वतः ही गर्म हो जाता है। हालांकि किस स्रोत से झरने का जल आता है, यह रहस्य है। जनवरी के महीने में यहां बहुत भीड़ रहती है। यहां [illegible] जाती है।

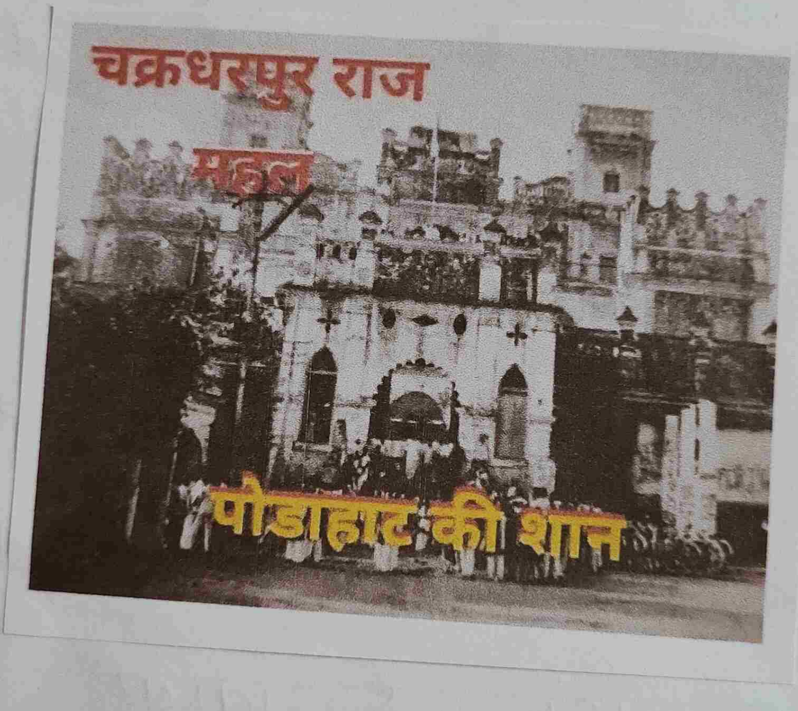
classmate
Date :
Page :

गोशाला, चाईबासा :- 1901 ई० में बनारसी दास पसारी ने गौ माता के रक्षार्थ चाईबासा गोशाला की स्थापना की थी। 27 अगस्त, 1925 ई० को महात्मा गांधी गोशाला पधारे थे। यह स्थान चाईबासा से 1.6 किमी से 2.2 किमी के मध्य गोशाला मार्ग में स्थित है। दीपावली तथा छठ पूजा के पश्चात इस स्थान पर गोशाला मेला लगता है, लोग इस दिन इस पर गोमाता की पूजा तथा दर्शन कर मेला का आनंद लेते है। यह मेला बहुत पहले से लगती आ रही है।

सरना स्थल, खुँटपानी :- चाईबासा से 15.7 किमी दूर चक्रधरपुर मार्ग खुँटपानी के पास 'सरना स्थल' है जो जनजातीय समुदाय के लिए आस्था का केन्द्र है। यहाँ दो वृक्षों के मिलन का अद्भुत दृश्य प्राकृतिक घटना को दर्शाती है यहाँ से थोड़ी दूरी पर ईसाई धर्म का पवित्र स्थान है। यहाँ 8 नवम्बर को वार्षिकोत्सव आयोजित होती है। यह स्थान ईसाई माता मरियम के लिए प्रसिद्ध है।

महादेबसाल :- यह स्थान गोइलकेरा से लगभग 5 किमी. तथा चाईबासा से 57.8 किमी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ भगवान महादेव को समर्पित एक महत्वपूर्ण मंदिर का घर है। इस मंदिर की स्थापना के साथ पौराणिक कथा जुड़ी हुई है। इसे झारखण्ड का दूसरा बाबा धाम कहा जाता है। शिव रात्रि के दिन, प्रत्येक वर्ष यहाँ एक विशेष मेले का आयोजन किया जाता है।


रामतीर्थ : एक आस्था का तट
मकर संक्रांति मेला 2020


चक्रधरपुर राज
महल
पोड़ाहाट की शान

classmate
Date :
Page :

पोंगा :- यह स्थान चक्रधरपुर में प्रखण्ड मुख्यालय से लगभग 15 किमी. दूर है। यह "मानगढ़" सागर के खण्डहरों के लिए उल्लेखनीय है, जिसका मूल रूप से राजा मान सिंह, एक सिक्ख (सोराग) जाति के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। इस स्थान पर गाँव में पौड़ी देवी का मंदिर दर्शनीय स्थल है।

पोरहाट :- राजा अर्जुन सिंह पोरहाट के राजा थे। 1857 के विद्रोह में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। पोरहाट राजपाट तथा महल के कुछ अवशेष है, जिससे उस समय के शासन का पता चलता है। अर्जुन सिंह के एकमात्र पुत्र कुंवर नरपत सिंह को उनके मृत्यु के पश्चात राजा बनाया गया, उनकी पुत्र के मृत्यु के पश्चात 1947 तक पोरहाट अंग्रेजी शासन में रहा। यह पश्चिमी सिंहभूम के राजा का इतिहास बयाँ करता है। यह एक ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है।

रामतीर्थ :- यह स्थान जगन्नाथपुर ब्लॉक में स्थित है। मकर संक्रांति (जनवरी) पर आयोजित होने वाले अपने वार्षिक मेले के लिए प्रसिद्ध है। इसमें एक शिव मंदिर के साथ - साथ बैतरनी नदी पर एक झरना भी है। स्थानीय किंवदंती के अनुसार, भगवान रामचन्द्र ने मेले दिन मकर संक्रांति पर इस नदी को पार किया था, वहाँ राम का पदचिन्ह को विशाल पाषाण पर देखने को मिलता है, यह चाईबासा से 63 किमी. की दूरी पर स्थित जैतगढ़ में है।

तोलकोबाद :- यह स्थान मनोहरपुर से 40 किमी दक्षिण में स्थित है। यह 1800 फीट की ऊँचाई पर पुडलैंड्स के बीच प्राकृतिक रूप से अपनी छटा बिखेरती हुई स्थित है। और कारई यह पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती है। विशेष रूप से शिकार में रुचि रखने वालों को यह स्थान अत्यंत प्रिय है

बेनीसागर :- पश्चिम सिंहभूम के मझगाँव ब्लॉक में बेनी सागर या बेनु सागर का नाम ऐतिहासिक धार्मिक, पुरातात्विक स्थल के रूप में मौजूद है। आज यहाँ 'हो' नामक जनजातियों का बाहुल्य है। बेनी सागर चाईबासा से 73.6 किमी एवं क्योंझर लगभग इतनी ही दूरी पर है। यहाँ पर बहुतों साल पुराने अवशेष मिले हैं। प्राप्त अवशेषों से ज्ञान होता है कि बेनीसागर के आस-पास आदि मानव का निवास लगभग 10,000 हजार वर्ष पूर्व से ही था। अभी तक के उत्खनन में शिव मंदिर, पंचायतन मंदिर, 35 से अधिक शिवलिंग, सूर्य-भैरव, लकुलिश, अग्नि, कुबेर, गणेश, महिषासुरमर्दिनी एवं द्वारपाल की मूर्तियाँ प्रमुख हैं। इसके अलावा लोहे की चूड़ियाँ, अंगूठी, तीर, भाला, चाकू, मिट्टी के मटके आदि भी प्राप्त हुए हैं। पुराविदों का अनुमान है कि यह स्थान पाँचवी सदी ईसा से लेकर सोलहवीं - सत्रहवीं सदी तक लगातार बसा रहा। यह एक दर्शनीय ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक स्थल है। यहाँ एक पौराणिक काल में राजा बेनु का राज्य था, यहाँ स्थित विशाल [illegible] मान्यता देते हुए, इस राज्य का नाम बेनुसागर था, कालांतर में बेनीसागर।

हाककुयम :- चाईबासा हाटगम्हरिया मार्ग एन० एच० ७५ में पूर्व की ओर से लगभग तीन किमी. तथा चाईबासा से २८.४ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हाककुयम में पहाड़ों और जंगलों के मध्य भगवान शिव का पौराणिक मंदिर दर्शनीय है। पौराणिक कथाओं में इसका उल्लेख मिलता है। मंदिर के पास जलप्रपात है जो पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

गोरलकेरा के दर्शनीय स्थल :- गोरलकेरा जो चाईबासा से ५२.८ किमी. की दूरी पर है वहाँ के तरकटकोचा पंचायत में कोयल और कारो नदी के संगम में स्वामी शंकराचार्य स्वरुपानंद स्वरस्वती द्वारा स्थापित समीज आश्रम है। इस आश्रम को बहुत ही सुंदर ढंग से बनाया एवं फूलों के क्यारियों द्वारा सजाया गया है। यहाँ की शांति पर्यटकों के मन को लुभा लेती है।

सिरिंगसिया घाटी :- टोंटो प्रखण्ड के सिरिंगसिया घाटी में 'हो' समुदाय ने ब्रिटिश के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी थी, यहाँ शहीद स्मारक है। दो फरवरी को शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है।

मुर्गा महादेव :- चाईबासा से ७३.१ किमी. एवं नोवामुंडी से लगभग ०७ किमी. पर ओड़िशा के मुर्गाबेड़ा से मुर्गा महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। पौराणिक काल में एक शिकारी यहाँ शिकार करने आया था। एक स्थल से पानी टपक रहा था, शिकारी ने देखा वहाँ एक शिवलिंग था। शिकारी के द्वारा शिवलिंग को स्थापित करते समय मुर्गा बांग दे रहा था, इस कारण इसका नाम मुर्गामहादेव पड़ा

चाईबासा के पौराणिक
तथा
ऐतिहासिक धार्मिक
स्थलों का विवरण
एवं
उनसे जुड़ी धार्मिक
आस्थाएँ

CLASSMATE
Date :
Page :

चाईबासा के पौराणिक तथा ऐतिहासिक धार्मिक संस्थानों का विवरण तथा उनसे जुड़ी धार्मिक आस्थाएँ

चाईबासा की जनसंख्या पड़ोस के जिलों तथा प्रांतों के लोगों से बनी थी, ये भिन्न-भिन्न धर्मों के भिन्नभाषी थे। इन्होंने ने ही गिरजाघरों, मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों की स्थापना की। यह पुराने धार्मिक संस्थानों का इतिहास काफी रोचक है तथा इनके पीछे कुछ कथाएं तथा कुछ मान्यताएँ भी जुड़ी हुई हैं।

उल्लेखनीय है कि 1890 ई॰ में स्थापित दुर्गा मंदिर, चाईबासा के 'सरस्वती हरिबोल कमिटी' द्वारा निर्मित की गयी थी, होली के अवसर पर यहां पहले 'हरिबोल कीर्तन' आयोजित किया जाता था। कालांतर में दुर्गा पूजा की शुरुआत हुई। दुर्गा पूजा के प्रति लोगों की विशेषकर बंगालियों की विशेष रूप से आस्था है।

① **काली मंदिर:-** चाईबासा के काली मंदिर का इतिहास सौ वर्ष पुराना है, यह ऐतिहासिक मंदिरों में से एक है। माँ काली का यह मंदिर 1823 ई॰ में बनाया गया था। इस मंदिर की परंपरा और यहां की रीति रिवाज और मंदिरों से अलग माना जाता है। मंदिर में स्थापित माँ काली की प्रतिमा को हर 12 साल के बाद विसर्जित किया जाता है। हर साल

काली पूजा अर्थात दीपावली के दोनों दिनों के दौरान भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। यह मंदिर चाईबासा के बाजार में स्थित है। यहाँ आज भी विधिवत पूजा की जा रही है, यह मंदिर स्वयं में विशेष महत्व रखता है। इस मंदिर में स्थापित माँ काली की प्रतिमा को 12 साल के अंतराल पर विसर्जित किया जाता है।

राजा और विशेष ब्राह्मण को आया था स्वप्न :— काली मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष सब्यसाची राय बताते हैं कि सन 1823 ई में धालभूमगढ़ वर्तमान में घाटशिला के तत्कालीन राजा रामचन्द्र धवल देव को चाईबासा में माँ काली की प्रतिमा स्थापित कर पूजा करने का आदेश स्वप्न में मिला था, जिसके पश्चात राजा ने सुबह उठकर स्वप्न के अनुसार विशेष ब्राह्मण से इस बारे में पूछताछ की, उन्हें पता चला कि वह विशेष ब्राह्मण पश्चिम बंगाल स्थित बाँकुड़ा जिले के जयकृष्णपुर गाँव के हैं। जिनका नाम जगन्नाथ गंगोपाध्याय है। राजा ने अपने दूत भेजकर इस संदर्भ में ब्राह्मण जगन्नाथ गंगोपाध्याय से संपर्क साधा, तो वे भावुक हो उठे। ब्राह्मण ने बताया कि हूबहू यही स्वप्न उन्हें भी आया था, ब्राह्मण के मुख से यह बात सुनकर राजा आश्चर्यचकित रह गए।

परिवार और नौकरी छोड़ माँ काली की सेवा में हुए लीन :— हालांकि, ब्राह्मण जगन्नाथ गंगोपाध्याय [illegible] थे, उन्होंने इस पूरी



घटना का ज़िक्र अपने बड़े पुत्र खेत्रो मोहन गंगोपाध्याय से किया, जिन्हें वर्धमान स्टेट के राजा के द्वारा राय उपाधि से सम्मानित किया गया था। पिता के आदेश के अनुसार राजा के भेजे गए दूत के साथ खेत्रो मोहन अपने बड़े पुत्र बलराम को साथ लेकर चाईबासा पहुंचे। वहीं विशेष स्थान पर देवी माँ के मंदिर की प्रतिष्ठा का काम शुरु किया गया। माँ काली की प्रतिमा स्थापित कर राजा से अनुरोध किया कि मैं अपना परिवार, खेती-बाड़ी, नौकरी छोड़कर चाईबासा में कैसे रहूंगा? मेरे पुत्र बलराम माँ की सेवा करेंगे, यह कहकर खेत्रो मोहन बांकुड़ा लौट गए।

आज भी है पशु बलि देने की परंपरा:–

इस प्रकार, राजा के द्वारा बलराम को सेवक के रूप में नियुक्त किया गया, इसके बाद से वहाँ पूजा-अर्चना शुरु हो गई जो आज तक निरंतर चल रही है। चाईबासा शहर के समस्त राय परिवार ही माँ काली की विशेष सेवा करते चले आ रहे हैं। सब्यसाची राय ने बताया कि माँ काली के मंदिर में आज भी पशु बलि देने की परंपरा है। लोग अपनी इस परंपरा को आज भी विधिवत निभाते आ रहे हैं।

मान्यता है कि माँ करती हैं मन्नतें पूरी:–

बलराम सेवक ने बताया कि लोगों को इस मंदिर से विशेष आस्था जुड़ी हुई है। यहां

के कई लोग राज्य के विभिन्न जगहों पर एवं विदेशों में कार्यरत है, लेकिन 15-20 वर्षों के बाद भी जब वह चाईबासा आते है तो मंदिर पहुचकर माँ का आशीर्वाद लेते है। लोगों की मान्यताएँ है कि माँ काली के दरबार से आज तक कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा है। माँ काली अपने सभी भक्तों की मन्नतें पूरी करती है।

धुमधाम से होती है नयी प्रतिमा स्थापित एवं पुराने प्रतिमा का विसर्जन :— वहीं इस मंदिर के सेवक भावतोष राय बताते है कि इस मंदिर की खास बात यह है कि मंदिर में स्थापित माँ काली की प्रतिमा 12 वर्षों के अंतराल पर विसर्जित किया जाता है। माँ काली के 12 वर्ष पूरे होने पर माँ काली की प्रतिमा को लोग ढोल-ताशे के साथ नृत्य करते हुए विसर्जित करते है, जबकि माँ काली की प्रतिमा विसर्जित होने के 11 दिन के भीतर नई प्रतिमा का निर्माण पूर्ण कर मंदिर में स्थापित कर देने की परंपरा है जो पूरे विधि-विधान के साथ माँ काली की प्रतिमा की पुनः स्थापना की जाती है। माँ काली की प्रतिमा को लोग अपने कंधों पर भी रखते है, मान्यता है कि ऐसा करने पर लोगों के शरीर की मानसिक, शारीरिक सभी प्रकार व्याधियाँ खत्म हो जाती है।

② **दुर्गा मंदिर :-** चाईबासा के डाकघर के कुछ कदम चलने पर 127 साल पुराने दुर्गा मंदिर का ऐतिहासिक दृश्य देखने को मिलता है। यह मंदिर 1895 ई० में स्थापित की गयी। 1890 में सरस्वती हरिबोल कमिटी की स्थापना हुई, कालांतर में दुर्गा पूजा की शुरुआत हुई। इस मंदिर में प्रत्येक वर्ष दुर्गा पूजा के दौरान पूजा-अर्चना बहुत ही भक्ति-भाव के साथ तथा धूमधाम, हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता आ रहा है। इस सौ वर्षों से भी पुराने मंदिर में आज भी बंगाली रीति-रिवाज से पूजा-अर्चना होती आ रही है। यहाँ आज भी पौराणिक मान्यता और परंपरानुसार माँ दुर्गा की प्रतिमा को रूप देने के लिए बाकुड़ा के शिल्पकार या मूर्तिकार चाईबासा आते हैं। ये मूर्तिकार पिछली कई पीढ़ियों-दर-पीढ़ी अपना कार्य निष्ठापूर्वक करते आ रहे हैं। यहाँ पर माँ दुर्गा की प्रतिमा को एक ही तरह से हर वर्ष रूप देते आते रहे हैं अर्थात सारे देवी-देवताओं का मुख एवं काया की बनावट में कोई अलगाव या अंतर नहीं किया जाता। नवरात्रि के शुरुआती दिनों से ही मंदिरों में चहल-पहल शुरु हो जाती है। षष्ठी के दिन से बंगाली रीति-रिवाज से पूजा-अर्चना तथा ढाक (विशेष प्रकार की बंगाल की वाद्य यंत्र) आदि बजाना शुरु हो जाता है। इन नौ दिनों के पहले दिन से ही चण्डी पाठ का होना शुरु हो जाता है। इन देवी आवाहन पाठों को मंदिर के पुजारी नियमित रूप से पाठ करते रहते हैं। दशमी के साथ पूजा की समाप्ति होती है।

चाईबासा के कुम्हारटोली का 80 साल पुराना ऐतिहासिक शिव मंदिर

चाईबासा के धोबी तालाब चौक स्थित 80 साल पुराना बाबा भोलेनाथ का कुम्हारटोली शिव मंदिर एक बड़ा आस्था का केन्द्र है। भोले बाबा के मंदिर से करीब 100 मीटर की दूरी पर कोल्हान ऐतिहासिक रोरो नदी बहती है। इस शिव मंदिर के बगल रोरो नदी पर छठ घाट भी बनाया गया है। वहीं मंदिर परिसर में पुराना पीपल का वृक्ष व फलदार वृक्ष भी लगाए गए हैं। इस मंदिर के बगल में पुजारी ने बजरंगबली का मंदिर स्थापित कर रखा है। बाबा भोलेनाथ के मंदिर की खासियत यह है कि आज से 80 वर्ष पूर्व 1940 में कुम्हार टोली के कुंभकारों के सहयोग से इस मंदिर की स्थापना की गई थी।

अशोक कुमार करते हैं मंदिर की देखरेख :—

इस मंदिर की देखरेख शिव भक्त अशोक कुमार प्रजापति करते हैं। उन्होंने बताया – वर्तमान में हर मुहल्ले में शिव मंदिर है। जिस कारण कुम्हार टोली शिव मंदिर में आने वाले भक्तों की भीड़ अब कम हो गयी है लेकिन आस्था है तथा पूजा-अर्चना अभी भी विधिवत होती है।

CLASSMATE
Date :
Page :

मंदिर के पुजारी ने बाबा के विषय में बताया :- मंदिर के पुजारी लाल मोहन मिश्राजी ने बताया - 1940 ई० से पूर्व उक्त स्थल पर शिवलिंग था। कुम्हारटोली के कुम्भकारों ने स्वेच्छा से चंदा इकट्ठा कर इस मंदिर की स्थापना की, तब से यह मंदिर चाईबासा के लोगों के लिए आस्था का केन्द्र बना हुआ है। उस समय यही एकमात्र पुराना तथा ऐतिहासिक शिव मंदिर हुआ करता था। और पुजारी लाल मोहन मिश्रा जी का कहना है कि वे इस मंदिर में 45 वर्षों से मंदिर के पुजारी हैं।

चाईबासा शहर के मस्जिद की स्थापना 100 वर्ष पहले की

चाईबासा शहर के पुराने मस्जिद के विषय में कुछ विशेष जानकारियाँ प्राप्त नहीं हो पायी है, फिर कुछ जानकारियों के बिनाह पर यह पता चल पाया है कि चाईबासा में मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग लगभग स्वाधीनता के पहले के वर्षों से ही यहाँ के निवासी हैं। इस्लाम संप्रदाय के द्वारा करीब 100 साल पहले अंग्रेजी हुकूमत के दौरान पहला मस्जिद का निर्माण किया गया था, जिसे हम जामा मस्जिद चाईबासा के नाम से जानते हैं। इसकी निर्माण की तिथि स्पष्ट नहीं है। किन्तु स्वतंत्रता के पहले की घटनाओं में इसका उल्लेख मिलता है। यह मस्जिद बड़ी बाज़ार में स्थित है। तत्पश्चात यहाँ के स्थानीय मुसलमानों के द्वारा सदर बाज़ार में दूसरी मस्जिद का निर्माण हुआ। इनके पर्व-त्योहार भी मस्जिद में काफी उत्साह से मनाए जाते हैं। रमजान का महीना इनके लिए पवित्र महीना होता है। मुहर्रम में जुलुस एवं प्रदर्शनी निकाली जाती है। ईद में पूरे बाजार में उत्साहपूर्वक खरीददारी की जाती है। एवं ईद के दिन इस्लामी सम्प्रदाय के लोग ईद की मुबारक देते हैं। पूरे बड़ी बाजार में इस दिन चहल-पहल एवं त्योहार [illegible] देखने को मिलती है। इनके धर्म में [illegible] नहीं होती।

चाईबासा के गुरुद्वारे का इतिहास

स्वतंत्रता के पश्चात् पंजाब से आए लोगों ने (सिक्ख) चाईबासा में आरा मशीन का कार्य आरंभ किया। चाईबासा में कोई गुरुद्वारा न होने के कारण उनमें अपने ईश्वर की प्रार्थना स्थल बनाने की इच्छा जागृत हुई। बहुत प्रयासों के पश्चात शुरुआत में बुजुर्गों के जद्दोजहद के कारण 7.5 डिसमील स्थान या खाली जमीन गुरुद्वारे के लिए मिली। उनके द्वारा आरा मशीन का कार्य होने के कारण लकड़ी सुलभता से उन्हें उपलब्ध थी। इसलिए पहला गुरुद्वारा उन सिक्खों के द्वारा लकड़ी का बनाया गया। सन् 1965 में ही गुरुद्वारे की नींव रखनी थी, किन्तु कुछ कारणवश गुरुद्वारा बनाने की योजना असफल रही। तत्पश्चात लगभग 1980 ई० के आस-पास पक्के घर का गुरुद्वारा का निर्माण किया गया एवं लकड़ी के बने गुरुद्वारे को पक्के गुरुद्वारे पर स्थानांतरित किया गया। 1980-2005 तक यह गुरुद्वारा उस पक्के घर में ही रहा। वर्तमान चाईबासा के स्टेशन रोड में स्थित गुरुद्वारे की नींव सन् 2000 में रखी गयी थी। तत्कालीन झारखण्ड के स्पीकर इंदर सिंह नामधारी के द्वारा सितम्बर 2005 में 'गुरुग्रंथ साहेब प्रकाश' किया गया। इसका भू-तल लगभग 6000 स्क्वायर फीट का था। इसके पश्चात गुरुद्वारे का कार्य निरंतर चलता रहा तथा जल्द ही इसके प्रथम मंजिल का निर्माण किया गया, शुरुआत

के लकड़ी से गुरुद्वारे के निर्माण से लेकर 6000 स्क्वायर फीट में बनाए गए नवीन गुरुद्वारे की स्थापना बहुत ही रोचक तथा मुश्किलों को पार करते हुए सफलता-पूर्वक हो पायी। 4 अप्रैल 2021 को पहली बार हाइड्रोक्लोरिक सिस्टम का प्रयोग कर गुरुसिंह सभा चाईबासा गुरुद्वारा में रविवार को पटना तख्त श्री हरमंदिर साहिब के जथेदार ज्ञानी सिंह साहब, रंजीत सिंह गौहर ए मसकीन ने 14 लाख की लागत से तैयार निशान-ए-साहिब व डियोढ़ी साहेब संगत को समर्पित किया गया। निशान साहिब की ऊँचाई अब करीब 35 (पहले) से 90 फीट हो गई है। यह पूरा सिस्टम पंजाब के भटिंडा से तैयार करवाकर यहाँ स्थापित किया गया। निशान साहिब को स्थापित करने से पहले दूध से धोया गया तथा चोला साहिब पहनाया गया। यहाँ जथेदार ने अरदास की एवं हाइड्रोलिक निशान-ए-साहिब को खड़ा किया, हजारों लोगों ने हरप्रीत सिंह का कीर्तन श्रवण किया और बड़े ही श्रद्धा के साथ लंगर ग्रहण किया। चाईबासा गुरुद्वारा के प्रधान गुरमुख सिंह खोखर के द्वारा बताया गया कि पहले निशान साहिब का चोला बदलने के लिए किसी एक सिक्ख को निशान साहिब के ऊपर चढ़ना पड़ता था, लेकिन इस हाइड्रोक्लोरिक सिस्टम के कारण निशान साहिब को सीधे जमीन से ऊपर तीन से चार फीट पर लिटाया जा सकता है। अब निशान साहिब का चोला आसानी से बदला जा सकता है और इसे बदलने में एक साथ कई लोग कर सकते हैं।

वर्तमान में 35-40 सिक्ख परिवार चाईबासा में रहते हैं। चाईबासा गुरुद्वारा आत्मनिर्भर है अपने आने वाले वर्षों का खर्च वहन करने के लिए, फिर भी (पंजाबी लोग) सिक्ख संप्रदाय के लोग तन, मन, धन से गुरुद्वारे की सेवा करने में जागरूक तथा तत्पर और निःस्वार्थ भाव से लगे रहते हैं। सिक्ख समाज के सारे पर्व-त्योहार गुरुद्वारे में मनाई जाती है। सिक्ख समाज के अतिरिक्त अन्य समाज के लोग भी इसमें शामिल होते हैं। गुरुद्वारा और लायन्स क्लब के संयुक्त प्रयास से मोर्चरी कूलर और ऑक्सीजन बैंक की सेवा भी आम जनता के लिए ही उपलब्ध करवायी गयी है।

152 वर्ष पहले हुई थी चाईबासा के ख्रिस्त गिरजाघर की स्थापना

चाईबासा के एलिजाबेथ ख्रिस्त गिरजाघर (जीईएल) की स्थापना आज से 152 साल पहले 21 जुलाई 1870ई को हुई थी। चाईबासा जीईएल चर्च का निर्माण में तीन विशेष जर्मन लुथेरन मिशनरियों का योगदान है। जिन्होंने हो और मुण्डा जातियों के बीच में शिक्षा और धर्म प्रचार का काम किया। प्रथम पादरी स्त्रोवे साहब 1864 ई में यहाँ आए और उन्होंने एक घर लेकर यहाँ शिक्षा और धर्म का प्रचार-प्रसार प्रारंभ किया। इसके बाद 1865 में लुथेरन मिशनरी क्रुगुर आए। यहाँ का वातावरण सही नहीं होने के कारण स्त्रोवे की मृत्यु हो गई। 1867 ई० में डॉ० अल्फ्रेड नोत्रोत जर्मनी से राँची होते हुए चाईबासा आए। 10 मई 1868ई में डॉ० नत्रोत कुपरेन मानकी और उसके घराने के लोगों को मसीही विश्वास में रखा। कुपरेन मानकी का नाम डेबिड कैप्टन मानकी रखा गया। कुपरेन मानकी का घराना ये सभी काठवारी के थे। 1867 ई० में पादरी क्रुगुर ने वर्तमान लुथरन मिशन का प्रबंध किया और गिरजाघर का नींव डाला। 21 जुलाई 1870ई को इस गिरजाघर का ख्रिस्त एलिजाबेथ चर्च का नाम रखा गया। एलिजाबेथ का अर्थ होता है - प्रभु के उपासक। काफी कठिन परिस्थिति में गिरजा का प्रयास से निर्माण किया गया। गिरजा[illegible] नींव 1867 ई० में डाला

गया था, जो आधारशिला रखी गई वह एबनेजर के नाम से जाना गया। यह पहला सामुएल 4 के एक पद में मिलता है। एबनेजर का अर्थ होता है - सहायता का पत्थर, गिरजाघर की नींव 1867 ई० में डाला गया था और यह 1870 ई० में बनकर तैयार हो गया, तीन पादरी यहाँ के भाषा से बिल्कुल प्रखर थे। उन्होंने यहाँ रह कर सम्पूर्ण हो मुण्डा के लिए और मुण्डा जाति के लिए सम्पूर्ण बाइबिल को 1910 ई० को मुंडा भाषा में प्रकाशित किया। प्रकाशनकार्य में डॉ० नोट्रोथ का विशेष भूमिका है। 21 जुलाई 1870ई० को प्रथम मुण्डा नथानियल डुयु (तियु) को पादरी का पद दिया गया। वर्तमान पादरी एमलीन गुड़िया (प्रेरिस पादरी) और जोरेम सुरीन (मंडली चेयरमेन) हैं। इसी चर्च के साथ ही चाईबासा के लुथेरन मिडिल स्कूल की भी नींव रखी गई थी। इसी स्कूल में ही धरती आबा भगवान बिरसा मुण्डा की प्रारंभिक शिक्षा हुई थी। जीईएल चर्च की गिनती प्राचीन और ऐतिहासिक गिरजाघरों में होती है।

चाईबासा के ऐतिहासिक एवं पौराणिक पर्व- त्योहार तथा कला-संस्कृति

चाईबासा के विभिन्न त्योहार एवं कला-संस्कृति को देखा जाए तो यह बड़े उत्साह तथा पारंपरिक तौर-तरीकों के साथ चिह्नित है, इसके लिए केवल चाईबासा शहर की ही नहीं बल्कि संपूर्ण झारखण्ड में मनाए जाने वाले त्योहार हमारे राष्ट्र की मजबूती तथा समग्र सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने के लिए इनकी जानकारी होनी आवश्यक है। विभिन्न समुदाय पूरे सांप्रदायिक सौहार्द्र के साथ अपने पर्व-त्योहारों तथा कला-संस्कृति को विरासत के रूप में संभालकर रखे हुए हैं।

पर्व- त्योहार

सोहराई पर्व :- यह चाईबासा के साथ, सम्पूर्ण झारखण्ड राज्य में मनाए जाने वाला एक प्रमुख पर्व है, जो आदिवासी समुदाय में प्रचलित है तथा दीपावली के अवसर पर अर्थात कार्तिक अमावस्या को मनाया जाता है। इस पर्व के दौरान पालतू पशुओं की पूजा की जाती है।

टुसू पर्व :- टुसू पर्व मकर संक्रांति के अवसर पर सिंहभूम जिले के आदिवासी विशेषकर महतो समुदाय के लोग बड़ी धूमधाम से सूर्य पूजा का यह पर्व मनाते हैं।

बाहा पर्व :— यह संथालियों का प्रसिद्ध पर्व है, जो मार्च महीने में तीन दिनों तक मनाया जाता है, विशेषरूप से यह पर्व जमशेदपुर में मनाया जाता है।

सरहुल :— यह चाईबासा शहर के पौराणिक आदिवासी त्योहारों में से एक है। यह आदिवासी समाज का प्रमुख त्योहार है। यह पर्व कृषि कार्य प्रारंभ करने से पूर्व मनाया जाता है। इसमें सरना में पूजा की जाती है। सरना सखुए के कुंज को कहते हैं। पुरोहित पूजा करते हैं। इस पर्व के दिन दूर-दूर रहने वाले आदिवासी भी सरहुल के दिन अपने घर चले जाते हैं। लड़कियाँ भी ससुराल से अपने मायके आ जाती है। घरों को साफ़-सुथरा कर लीपा-पोता जाता है। घरों की दीवारों पर रंग-बिरंगे चित्र बनाकर उन्हें आकर्षक बनाया जाता है। यह पर्व बड़े उत्साह से मनाया जाता है। दिनभर खाना-पीना और नाचना-गाना चलता रहता है।

बंदना :— यह संथालों का त्योहार है, जो दीवाली के अवसर पर, अर्थात् कार्तिक अमावस्या को मनाया जाता है।

कर्मा :— यह पर्व भी पौराणिक आदिवासी पर्वों में से एक है। यह पर्व मुख्य उरांव आदिवासी लोग भाद्रपद की शुक्ल पक्ष की एकादशी को बड़े उत्साह से मनाते हैं। कुछ और आदिवासी हिन्दु भी इस पर्व को मनाते हैं। पूजा के दिन

२४ घंटे का उपवास रखा जाता है। नृत्य के मैदान में करम वृक्ष की एक डाली गाड़ी या रोपी जाती है और रात भर नृत्य और गीत का कार्यक्रम चलता है। गीत के माध्यम से कर्मा धर्मा की कहानी कहते है। शाम के समय इनका भव्य जुलूस जिसमें पूरे आदिवासी तथा उराँव समाज के लोग सम्मिलित होकर सड़कों पर अपने पर्व का भव्य प्रदर्शन करते हुए नृत्य करते हुए अपने वाद्ययंत्रों के साथ आगे बढ़ते रहते हैं, यह वाकई दर्शनीय होता है।

रक्षा बंधन :- यह त्योहार हिन्दू समाज का एक ऐतिहासिक त्योहार है, जिसे सनातन धर्म के लोग पारंपरिक तरीके से पौराणिक कथा अनुसार विधिवत मनाते हैं। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई में राखी यानि रक्षासूत्र बाँधती है। जिसका अर्थ भाइयों द्वारा बहनों की रक्षा का प्रन है। इस दिन विशेष रूप से खीर, पकवान आदि बनाए एवं खाए जाते हैं। ब्राह्मण लोग भी अपने यजमानों को हाथों में राखी बाँधते है, इस पर्व को गैर-हिन्दू भी बड़े चाव से मनाते है। इसके अगले दिन अनेक स्थानों पर मेले आयोजित होते हैं।

क्रिसमस :- यह ईसाइयों का सबसे बड़ा पर्व है। यह पर्व हर साल दिसंबर महीने की २५ तारीख को मनाया जाता है। इसी दिन ईसाइयों के महाप्रभु ईसा मसीह का जन्म हुआ था। इस दिन प्रातःकाल सभी ईसाई लोग चर्च में जाकर सामूहिक प्रार्थना

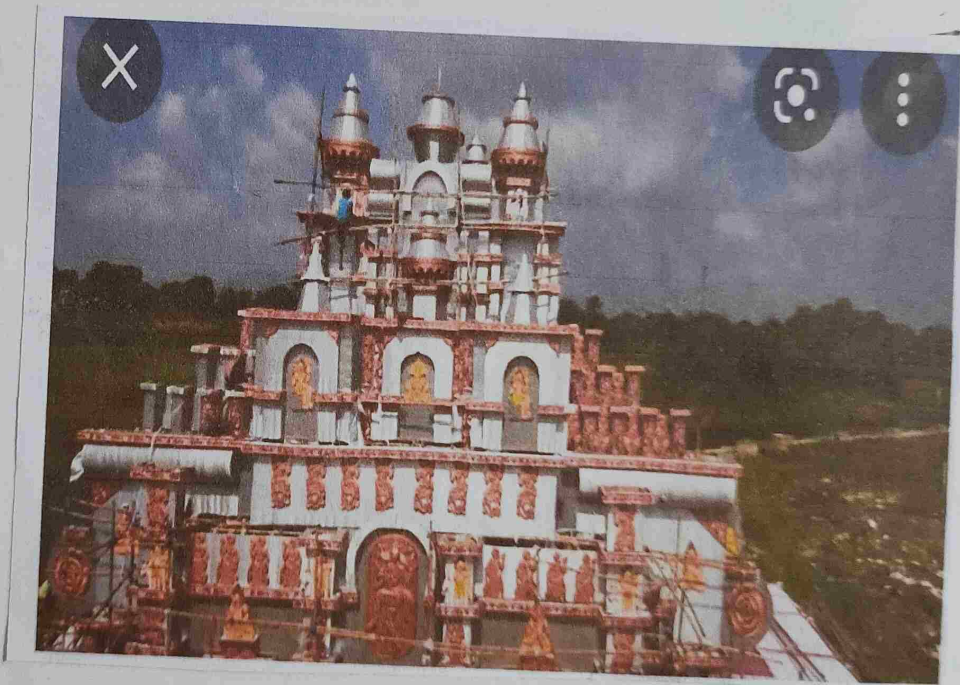
Date :
Page :

करते हैं। सभी नए परिधान पहनते हैं, संबंधियों, मित्रों आदि से मिलते हैं और उन्हें क्रिसमस की शुभकामनाएँ देते हैं। कुछ लोग दूर रहने वाले मित्र और संबंधियों को क्रिसमस की बधाई संदेश भेजते हैं, बच्चों को उपहार देते हैं इस दिन अच्छा-पीना होता है। यह पर्व ईसाईयों के लिए बड़ा ही खुशी का दिन होता है। चाईबासा में पौराणिक चर्च होने के कारण यह पर्व ईसाई लोग बड़े उत्साह से मनाते हैं।

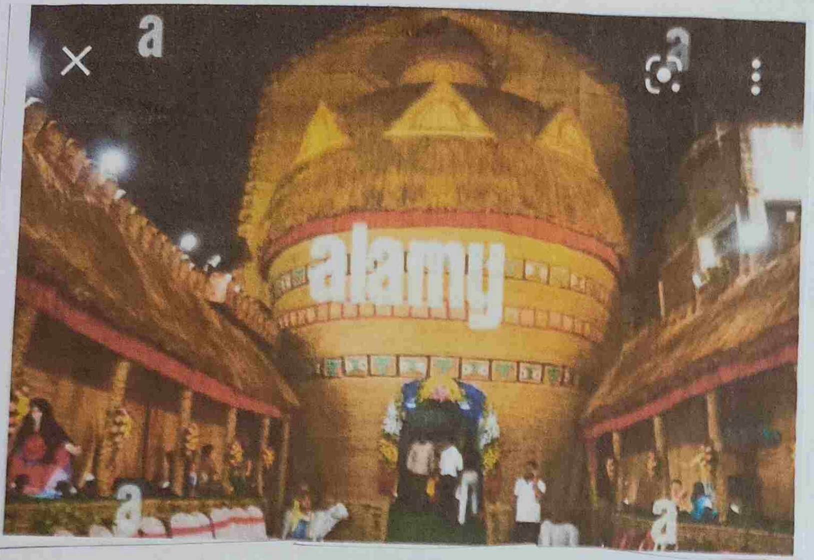
सरस्वती पूजा :— माघ शुक्ल पंचमी को बसंत पंचमी के दिन यह त्योहार मनाया जाता है। यह विशेष रूप से बंगालियों प्रसिद्ध त्योहार है। इस दिन माँ सरस्वती की प्रतिमा की पूजा कर विधिवत रूप से दो दिन रखने के पश्चात विसर्जित कर दिया जाता है। यह विद्या की देवी होने के कारण प्रत्येक हिन्दु स्कूल-कॉलेजों एवं कुछ मुहल्ले में इनकी पूजा बड़े ही धूमधाम से की जाती है। बच्चों में इस त्योहार को लेकर काफी उत्साह देखा जाता है। भजन, माँ सरस्वती की आरती विद्यार्थीगण बड़े ही भक्ति-भाव से करते आ रहे हैं।

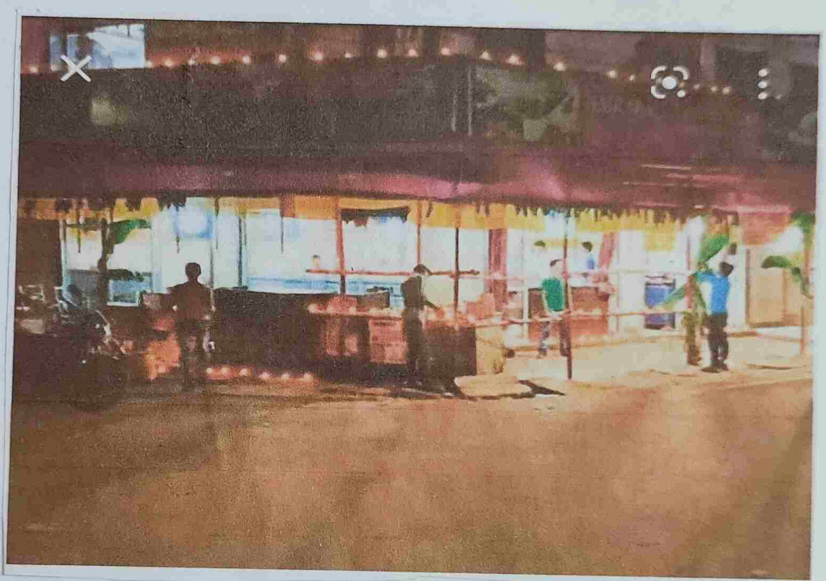
विजयादशमी :— यह त्योहार आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाता है। यह हिन्दु धर्म के एक विशेष महत्व रखने वाला एक पौराणिक तथा ऐतिहासिक पर्व है। यह चाईबासा के प्रत्येक दुर्गा मंदिर में पारंपरिक तरीके से नवरात्रि के पहले दिन से ही पूजा-अर्चना आरंभ हो जाती है। यह त्योहार अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। मंदिरों के [illegible] दिनों निष्ठापूर्वक





पाठ करते रहते हैं। दुर्गा पूजा के चार दिनों में मंदिर के पंडाल में भक्तों एवं श्रद्धालुओं की भीड़ लगा रहता है। इन दिनों माता दुर्गा के दर्शनाभिलाषी दूर-दूर से आते हैं। देवी दुर्गा के नौ रूपों के पूजा के दौरान आठवें दिन यानि अष्टमी पूजा की मान्यता विशेष रूप से है। संधि पूजा और बलिदान के समय विशेष पूजा की जा है। लोगों की इस समय बड़े पैमाने पर भीड़ रहती है पंडालों पर। नवमी के दिन कन्यापूजन पूजन की परंपरा है। जो कुंवारी कन्याओं को माँ दुर्गा के नौवें दिन का स्वरूप मानकर उनकी पूजा-अर्चना कर उन्हें शाकाहारी फल-मिठान, खीर, पुड़ी का भोजन करवा कर दान-दक्षिणा देने का और आशीर्वाद लेने का रिवाज है। दशमी के दिन माता का दशमी पूजा कर विजयादशमी का सिंदूर खेला आरंभ होता है, यह बंगाली स्त्रियों में विशेष महत्व रखती है। लोग एक-दूसरे का मुँह मीठा करवाते है, स्त्रियाँ माँ दुर्गा से विपत्तियों और संकट से लड़ने का वरदान मांगती है। परिवार की सुख-शांति का कामना करती है। इस दिन नीलकंठ पक्षी का दर्शन अत्यंत शुभ माना जाता है। इस दिन श्रीराम ने रावण का वध किया था। बहुत से शहरों में रामलीला की जाती है। तथा रावण, मेघनाथ तथा कुंभकर्ण के पुतले जलाये जाते हैं। चाईबासा में भी लगभग 30 से 50 वर्ष पूर्व यह पुतले जलाये जाते थे। इसी दिन राजपूत लोग अपने शस्त्रों की पूजा भी करते हैं। तथा विशेष रूप से दुर्गा की पूजा महिसासुर नामक राक्षस का वध करने के लिए किया जाता है


alamy




alamy



दीपावली !— यह त्योहार कार्तिक माह की अमावस्या को हिन्दु समाज और जैन समाज में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व के आने से पूर्व घरों, दुकानों आदि की सफाई, पुताई और रंगाई होती है। उन्हें बढ़िया से सजाया जाता है। जैन समाज के लोग यह पर्व भगवान श्री महावीर के निर्वाण दिवसरूप में मनाते हैं और हिन्दु लोग इसे भगवान श्रीराम के वनवास पूरा कर तथा रावण के ऊपर विजय के उपरांत अयोध्या आगमन के रूप में दिये जलाकर पूरे शहर को रोशन कर मनाते हैं। वैश्य लोग इस दिन अपने बहीखाते बदलते हैं। इसके दो दिन पूर्व धनतेरस होती है, इस दिन कुछ भी नया खरीदकर लाया जाता है इसके दूसरे दिन छोटी दीपावली और उसके बाद अमावस्या को बड़ी पूजा (मुख्य) दीपावली होती है। इन दोनों दिनों में चाईबासा में सौ वर्षों के पहले से प्रतिष्ठित काली मंदिर में बहुत ही पारंपरिक एवं विधिवत तरीके से माँ काली की पूजा होती है। श्रद्धालुओं की भीड़ देखने लायक होती है। इस दिन रात्रि को दीपक जलाकर अमावस्या के घोर अंधकार का नाश किया जाता है तथा गणेश-लक्ष्मी जी का पूजन किया जाता है। घरों मिठाई, पकवान बनते हैं, नए वस्त्र पहनते हैं, खिलौने लाते हैं (मिट्टी के) आतिश-बाजी एवं पटाखे छोड़ते हैं। रात भर दीपक जलाया जाता है।

गोवर्धन पूजा :— दीपावली के अगले दिन कार्तिक शुक्ल प्रथमा को यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन गोवर्धन की पूजा होती है। इस दिन मंदिरों में अन्नकूट की पूड़ी व सब्जी तैयार होती है, जो सबको प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। इस पशु क्रीड़ा का आयोजन किया जाता है।

होली :— यह पर्व चाईबासा के साथ-साथ पूरे झारखण्ड के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। होली का वसंत त्योहार फाल्गुन के महीने में मनाया जाता है। यह त्योहार हिन्दु तथा गैर-हिन्दु भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। होलिका दहन की पौराणिक कथा के साथ इस पर्व का महत्व है। अच्छाई की तथा सत्यता की विजय इस पर्व को दर्शाता है। यह त्योहार सद्भाव की भावना को बढ़ाते है जिससे खुशी बनी रहे। लोग एक-दूसरे को रंगों से अभिवादन करते हैं। बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। विभिन्न प्रकार के पकवान बनाए जाते हैं तथा खिलाए जाते हैं। वृंदावन में राधा-कृष्ण की होली विशेष तथा भव्य रुप से प्रदर्शित की जाती है।

छठ पूजा :— यह पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी के दिन मनाया जाने वाला एक हिन्दु पर्व है। यह पर्व बिहारियों का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है। यह पर्व भारत के विभिन्न राज्यों में मनाए जाते हैं। यह पर्व वैदिक काल से चला आ रहा है एवं वैदिक आर्य संस्कृति की छोटी-सी एक झलक को दर्शाता है। इस पर्व को हिन्दु तथा गैर-हिन्दु भी मनाते हैं। छठ पूजा सूर्य, उषा, प्रकृति, जल, वायु और उनकी बहन छठी मइया को समर्पित है ताकि उन्हें पृथ्वी पर जीवन की देवताओं को बहाल करने के लिए धन्यवाद तथा कुछ शुभकामनाएँ देने का अनुरोध किया जाए। छठ पूजा में कोई मूर्ति पूजा शामिल नहीं है। यह त्योहार को [illegible] चार दिनों की अवधि में मनाए जाते हैं इसमें शाम और सुबह को

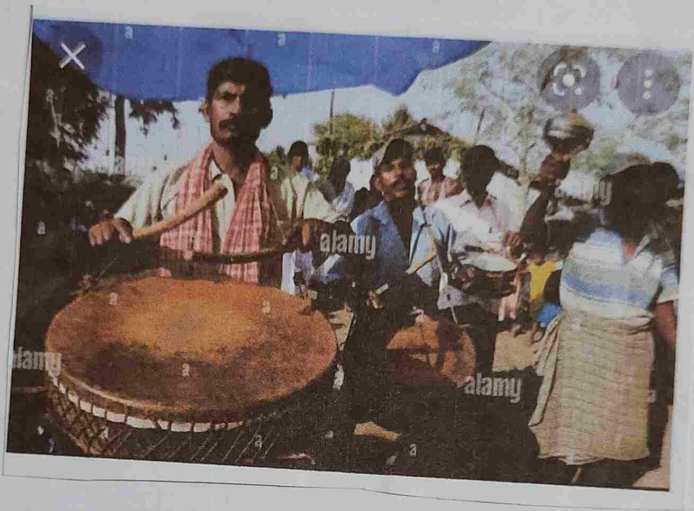
अर्घ्य का विशेष महत्व है। यह नदी के घाट पर मनाया जाने वाला उत्सव है। चाईबासा में यह पर्व बहुत समय मनाए जाते आ रहा है। रोरो नदी, करनी मंदिर के घाट, कुजु के घाट पर विशाल संख्या में छठ पूजा के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ देखी जा सकती है

ईद !— ईद मुसलमानों का सबसे बड़ा पर्व है। रमजान के महीने में मुसलमान लोग 30 दिन का रोज़ा रखते हैं अर्थात दिन भर का उपवास रखते हैं। जिस दिन रमजान का महीना समाप्त होता है, उसके दूसरे दिन ईद का पर्व मनाया जाता है।

चाईबासा के बड़ी बाज़ार में सौ साल से भी पुराना जामा मस्जिद है। तथा नए मस्जिद का निर्माण सदर बाजार में किया गया है। ईद के पहले दिन पूरे बाज़ार में ईद की खरीददारी करने के चहल- पहल रहती है। यह त्योहार मुसलमान के द्वारा भव्य तरीके से मनाया जाता है। ईद के दिन नए कपड़े पहने जाते हैं, बच्चे- बूढ़े तथा युवक सभी नमाज अदा करते हैं। नमाज़ के उपरांत खुतबा (उपदेश) पढ़ा जाता है। खुतबा समाप्त होने पर सभी एक-दूसरे से गले मिलते हैं। इस दिन सेवई, लच्छे, मिठाइयां खायी जाती है। मुसलमान इस दिन एक- दूसरे को ईद की मुबारक देते हैं। यह त्योहार आपसी भाईचारे का त्योहार है।

मुहर्रम !— मुहर्रम अरबी के पहले महीने का नाम है। इस दिन हजरत इमाम हुसैन, उनके परिवार के अन्य सदस्य एवं अनुयायी शहीद हुए थे। इसे




alamy
alamy
alamy





दिन महत्वपूर्ण घटना की याद में मुहर्रम मनाया जाता है।

इस अवसर पर इमाम हुसैन को मनाने वाले अलम (पताका) ताज़िया, जुलज़नाह, सपूर आदि निकालते हैं। गरीबों को मुफ्त में भोजन बांटा जाता है। यह महीना इस्लाम मानने वालों के लिए सच्चाई पर अपना सब कुछ लुटाने का प्रतीक है। इस माह को इस्लाम के चार पवित्र महीनों में शुमार किया जाता है। अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद ने इस मास को अल्लाह का महीना कहा है। इसे चार पवित्र महीनों में रखा गया है, इनमें से दो महीने मुहर्रम से पहले आते हैं। यह दो मास - ज़ीकादा और ज़िलहिज्ज हैं। इस मास में रोजा रखने की खास अहमियत बयान की है। तथा इस्लामी धर्म के हिजरी वर्ष का आरंभ इसी महीने से होता है।

मागे पर्व :- आदिवासी 'हो' समुदाय के नव वर्ष का पहला और सबसे बड़ा त्योहार है - मागे परब यह फसल के कटने व खेत खलिहान के कार्य खत्म होने के बाद माघ महीने के पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस पर्व के मनाने के पीछे अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। इनमें नई जगह गाँव बसाने की एक कथा भी प्रचलित है।

दरअसल (1) मागे दो शब्दों का योग है, मा का अर्थ - माँ और गे का अर्थ - 'तुम ही हो' होता है। इस तरह यह धरती माता के साथ गोमाता का पर्व है।

(2). सिंगबोंगा यानी ईश्वर ने सृष्टि की रचना लुकु व लुकुमी से की। इस पर्व में रातभर नाच - गाना होता है हर घर से चावल एकत्र कर गाँव के बाहर पकाकर खाते हैं

झारखण्ड में विलुप्त होती
असुर जनजाति
को है प्रमुख अस्तित्व

CLASSMATE
Date :
Page :

झारखण्ड में असुर जनजाति का है प्रमुख अस्तित्व

झारखण्ड की प्रमुख आदिम जनजाति असुर हैं। ये प्राचीनतम जनजाति में शामिल हैं। यही यहां के सबसे पुराने बाशिंदे माने जाते हैं। ऋग्वेद में इन्हें पुर निर्माता कहा गया है। लोहा गलाने की पद्धति सबसे पहले इन्होंने ही ईजाद की थी। इनसे जुड़े ऐतिहासिक स्थल भी जमींदोज हो रहे हैं। राज्य सरकार की उदासीनता इन ऐतिहासिक स्थलों के लिए भी भारी पड़ रही है। राँची, खूँटी, लोहरदगा, हजारीबाग, चाईबासा आदि में अनेक असुर साइट हैं। खूँटी जिले में ही कुआरटोली, कुंजला, सारीदकेल, कठारटोली एवं हांसा को संरक्षित स्मारक घोषित किया जा चुका है। सारीदकेल करीब पचास एकड़ में फैला है। सारीदकेल खूँटी-तमाड़ रोड पर स्थित है। तजना नदी के तट पर एक विशाल टीला आज भी मौजूद है। वहाँ से कई प्रकार के अवशेष मिलते रहते हैं। इसकी खोज सबसे पहले एससी राय ने 1915 ई० में खूँटी के बेलवादाग में की थी। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा खुदाई में यहाँ से मनके, चूड़ियाँ, चाकू, भाला, मकानों के अवशेष, मृदभांड आदि मिले हैं विशाल टीले को देखकर उस बस्ती का अंदाजा लगा सकते हैं। कुंजल खूँटी से पश्चिम में है। तीन एकड़ में फैले इस साइट की खोज भी शरतचंद्र राय ने ही की। कठारटोली राँची से दक्षिण चाईबासा रोड पर है। चौबीस एकड़ में फैले इस

इस सागर से भी खुदाई में ताँबे की चुड़ियाँ मिली हैं, जो पटना संग्रहालय में रखी है। खूँटी टोला भी तीन एकड़ में है, कोटरी नदी के किनारे। यहाँ भी मिट्टी के दीये, चुड़ियाँ, घंटी, अँगूठी आदि मिले हैं। हाँसा राँची से दक्षिण दिशा में है। 1944 ई० में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निदेशक ने खोज की। इनके मकान ईंटों से बनाए गए हैं। ईंटों का आकार काफी बड़ा है, पर दुर्भाग्यवश इतिहास में नया मोड़ ले आने वाली यह असुर जनजाति आज धीरे-धीरे इतिहास के पृष्ठों में सिमटती जा रही है।

चाईबासा से सटा हुआ
सैरेंगसिया घाटी
के विद्रोह के संबंध
में

चाईबासा से सटा हुआ सेरेंगसिया घाटी के विद्रोह के संबंध में :

ऐसा कहा जाता है कि कोल्हान (वर्तमान में झारखण्ड के तीन जिले - पूर्वी सिंहभूम, पश्चिम सिंहभूम और सरायकेला - खरसावाँ कोल्हान प्रमण्डल कहलाते हैं) के लोग कभी किसी मुगलों, मराठों और अंग्रेजों के गुलाम नहीं रहे हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि कई बड़े योद्धा इस पवित्र भूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

सेरेंगसिया घाटी परिचय :— इन्हीं में से कई योद्धा सेरेंगसिया घाटी (सेरेंगसिया घाटी चाईबासा - जगन्नाथपुर में मुख्य मार्ग है, यह चाईबासा से 29 किलो-मीटर और जगन्नाथपुर से 19 किलोमीटर की दूरी पर प्रकृति की गोद में स्थित है) में हुए भीषण युद्ध को भी जीतने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। इनमें मुख्य हैं — पोटो हो, देवी हो, बोड़ो हो, बुड़ाई हो, नारा हो, पंड़वा हो, भुगनी हो। पोटो हो को इन सभी के नेतृत्वकर्ता के रूप में जाना जाता है। कोल्हान में अलग - अलग जगह पर चल रहे विद्रोह ही आगे चलकर सेरेंगसिया में एक बड़े युद्ध का रूप ले लेता है।

विद्रोह की शुरुआत :— अब आंदोलन तो रुक गई थी लेकिन अंग्रेज़ अपने हरकतों से बाज नहीं आए थे। उन्होंने फिर से पुलिस बल की मदद से फरवरी 1837 ई० को सिंहभूम के कई सारे गाँव को अपने अधीन कर लिया था और



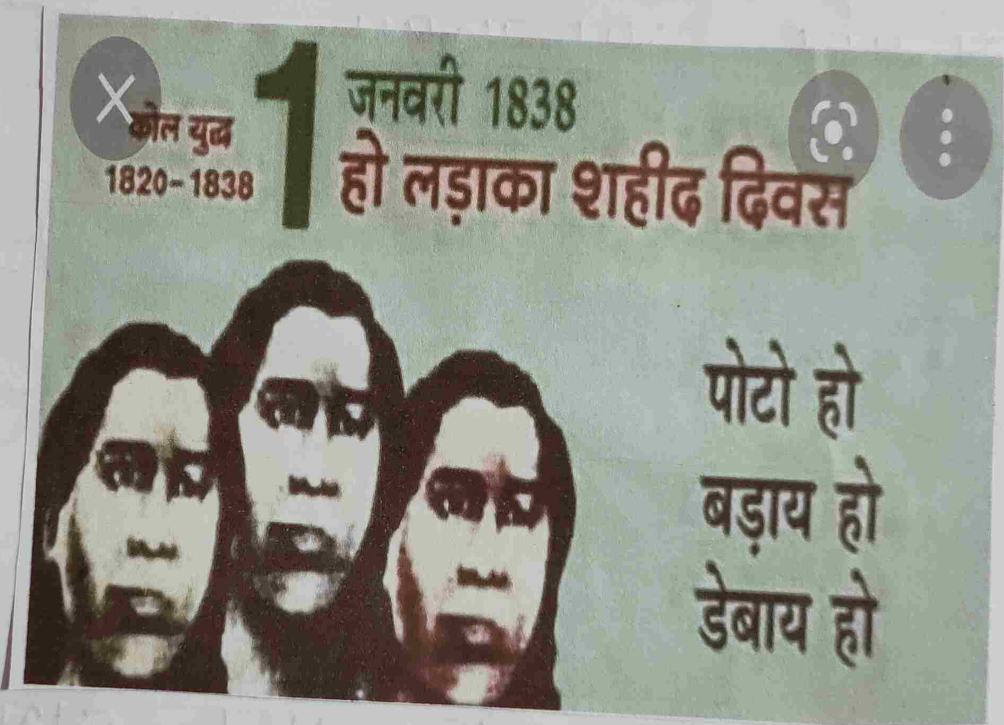
सेरेंगसिया शहीद दिवस

सेरेंगसिया घाटी

दक्षिण पश्चिम सीमांत एजेंसी की स्थापना की गयी, थॉमस विल्किंसन को इस एजेंसी का एजेंट बनाकर भेजा गया। यह देख फिर से विद्रोह शुरु हो गया चूंकि इसी विद्रोह में पोटो हो भी शामिल होते हैं और यहीं से शुरू होती है सेरेंगसिया घाटी की कहानी।

पोटो हो :- पोटो हो जन्म पश्चिम सिंहभूम जिला के अन्तर्गत जगन्नाथपुर प्रखण्ड के राजाबासा में हुआ था। पोटो सरदार (हो) के नेतृत्व में आसपास के लगभग 22 पीढ़ों के लोग अंग्रेज़ों के खिलाफ़ विद्रोह का बिगुल बजा दिए थे। बहुत जगह छोटा-मोटा लड़ाई भी होने लगा था। हर बार अंग्रेज़ अपना मुँह उठाकर भाग जाते थे। इससे आंदोलनकारी हो लड़ाकों का और भी हौसला बढ़ जाता था। अंग्रेजों के विरोध में बलांडिया गाँव में गुप्त सभा की गई, जिसमें सेरेंगसिया और बागालिया घाटी में अंग्रेजों को रोकने का निर्णय लिया गया, आसपास के सभी गाँव के मुण्डा को तीर भेजकर विद्रोह में शामिल होने के लिए निमंत्रण भेजा गया, इस बात का खबर अंग्रेज़ों को थी ही नहीं, उधर विल्किंसन आंदोलन को दबाने के लिए अपने अफसरों के साथ 12 नवंबर को चाईबासा में बैठक किए, विरोध को दबाने के लिए 17 नवंबर को कैप्टन आर्मस्ट्रांग के नेतृत्व में 400 पैदल सैनिक, 60 घुड़सवार सिपाहियों और दो तोपों के साथ बाढ़पीढ़ में हो लोगों के साथ युद्ध के लिए रवाना हुए




कोल युद्ध
1820-1838
1 जनवरी 1838
हो लड़ाका शहीद दिवस
पोटो हो
बड़ाय हो
डेबाय हो

थे परंतु इसकी खबर पोटो हो को मिल चुकी थी इसलिए वे पहले से ही तैयार थे। 18 नवंबर को पोटो हो अपने साथियों के साथ सेरेंगसिया घाटी तथा बागाबिला घाटी से साथियों के साथ सेरेंगसिया घाटी तथा बागाबिला घाटी से अंग्रेज़ों को मार भगाया, इस छापामार युद्ध में 26 'हो' लड़ाके शहीद हुए थे और अंग्रेज़ों की तरफ़ से एक सूबेदार एक हवलदार और 13 सिपाही घायल हुए थे।

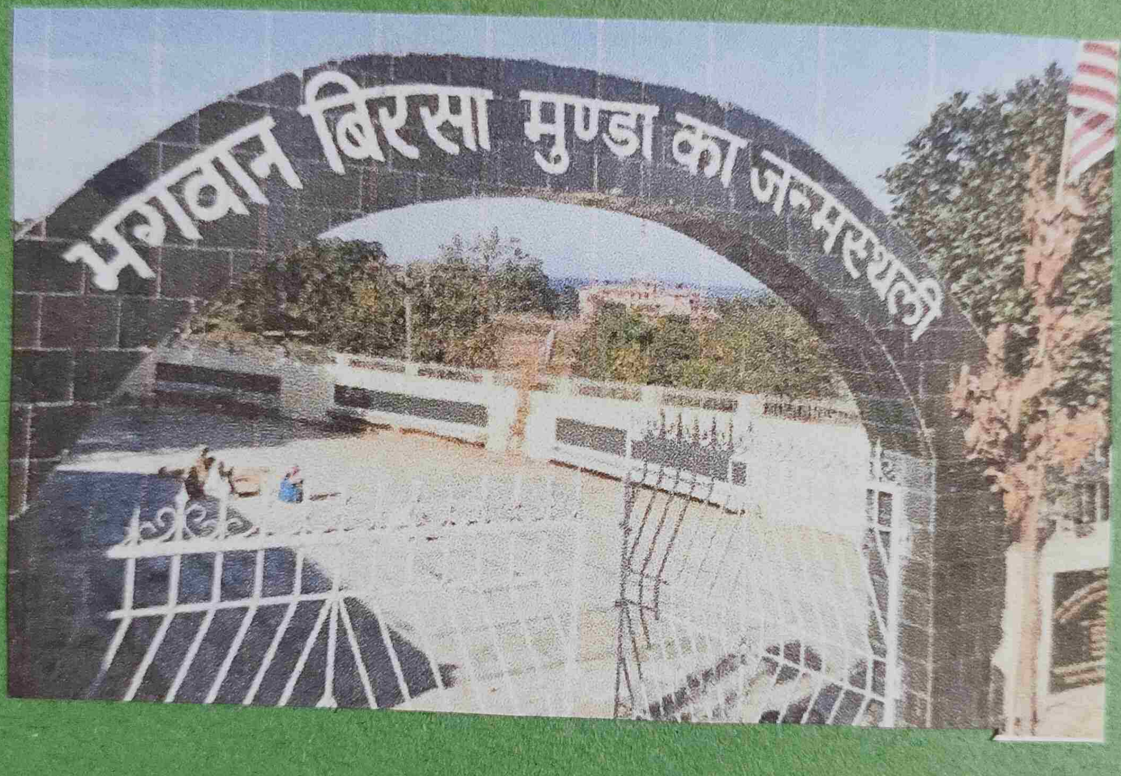
अंग्रेज़ों द्वारा आक्रमण :- इस युद्ध के बाद अंग्रेज़ों द्वारा 20 नवंबर 1837 ई० को राजबासा में आक्रमण किया गया, और पूरे गाँव को जला दिया गया, इस गाँव से छह लोगों को गिरफ्तार किया गया जिसमें पोटो हो के पिता भी थे, आसपास के और भी कई गाँवों को जलाया गया एवं वहाँ मौजूद पशुओं को भी मार दिया गया, 22 नवंबर 1837 ई० को तोरांगहातु में हमला किया गया, यहाँ उन्हें सिर्फ़ आठ महिलाएँ और दो पुरुष मिले, पुरुषों को मार दिया गया और महिलाओं को गिरफ्तार किया गया। तगड़ाहातु और जयपुर गाँव पर भी हमला कर गाँव को जला दिया। बहुत खोजबीन के बाद 08 दिसम्बर को पोटो हो को सेरेंगसिया गाँव से गिरफ्तार किया गया, उसके बाद उनके सभी साथियों को भी धीरे-धीरे कर गिरफ्तार कर लिया गया, 01 जनवरी 1838 को पोटो हो, बुड़ई हो



तथा नारा हो को जगन्नाथपुर के बरगद पेड़ पर फांसी दी गई। जबकि अगला दिन 02 जनवरी को बोड़ो हो तथा पंड़वा हो को सेरेंगसिया घाटी में फांसी दी गयी। बाकी शेष 79 हो वीर लड़ाकों को विभिन्न आरोपों में जेल भेज दिया गया।

विद्रोह का परिणाम :— इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि 1837ई० में ही कोल्हान को कोल राज्य घोषित किया गया। इसी युद्ध के वजह से और यहां के आदिवासियों के विरोध को देखते हुए ही कोल्हान में स्वशासन व्यवस्था को बनाए रखने के लिए विल्किंसन रूल को लागू किया गया, 02 फरवरी के दिन सेरेंगसिया घाटी शहीद स्थल पर आस - पास के गांव वालों को या उसके अलावा चाईबासा, चक्रधरपुर, जमशेदपुर मनोहरपुर, रांची, जगन्नाथपुर इत्यादि दूर-दूर से लोग आते हैं और शहीद स्मारक पर तेल डाल कर एवं अगरबत्तियां जला कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस पवित्र स्थान पर राज्य के मुख्यमंत्री के साथ राज्य के नेतागण भी आते हैं और श्रद्धांजलि देते हैं। समिति के तरफ से दिउरी सेरेंगसिया घाटी के युद्ध में शहीद हुए वीरों को सामुहिक रूप से पारंपरिक तरीके से पूजा अर्चना कर श्रद्धांजलि देते हैं। शहीद दिवस के शुभ अवसर पर सेरेंगसिया गांव में मेला के बहाने से भी होता है।

भगवान बिरसा मुण्डा से जुड़ी चाईबासा का इतिहास

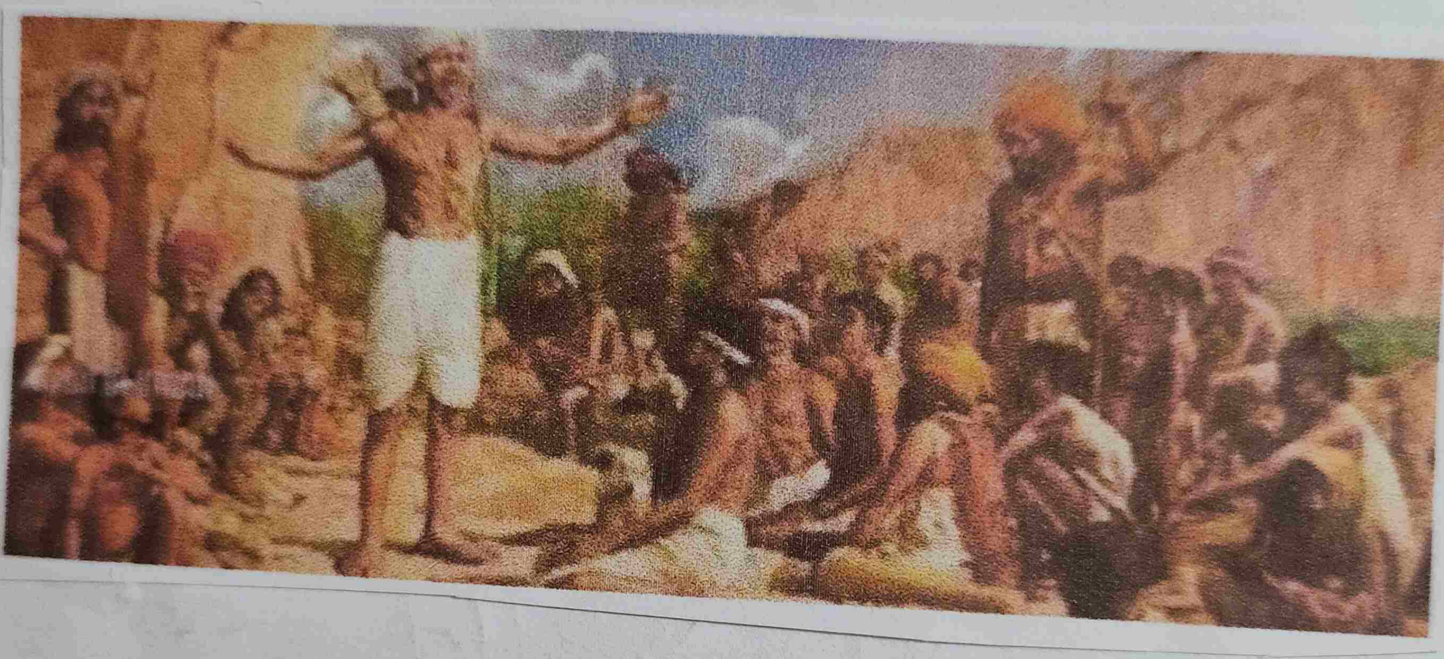

भगवान बिरसा मुण्डा का जन्मस्थली

भगवान बिरसा मुण्डा से जुड़ी चाईबासा का इतिहास :

भगवान बिरसा मुण्डा का जन्म 1875ई॰में, उलीहातु नामक स्थान (जो राँची में पड़ता है) में हुआ। सालगा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंगलिश स्कूल (Gossner Evangelical Lutheran Mission School) में पढ़ने आए। सुगुना मुण्डा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुण्डा के मन में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ बचपन से ही विद्रोह था।

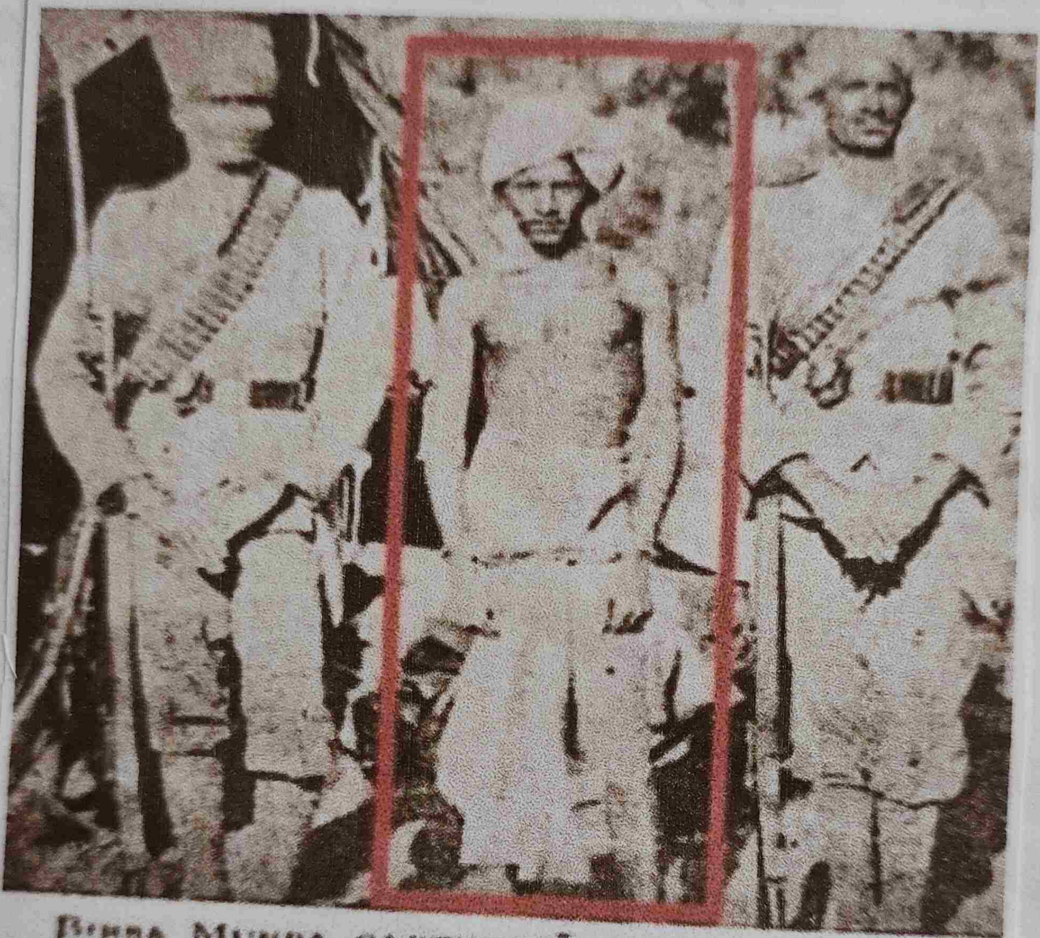
बचपन में बिरसा मुण्डा एक बेहद चंचल बालक थे। अंग्रेज़ों के बीच रहते हुए वह बड़े हुए तथा उनके द्वारा अपने जन्मस्थान पर एवं आवास स्थान को अपने कब्ज़े में करने के लिए उनके द्वारा किए गए अत्याचारों को वह देखते हुए बड़े हो रहे थे, एवं उनके मन से अंग्रेज़ों के खिलाफ़ क्रोध तथा आक्रोश बढ़ता जा रहा था। बचपन का अधिकतर समय उन्होंने अखाड़े में बिताया। हालांकि गरीबी की वजह से उन्हें रोजगार के लिए समय-समय पर अपना आवास बदलना पड़ा। इस भूख की दौड़ ने ही उन्हें स्कूल यानि शिक्षा की राह दिखायी। उन्हें चाईबासा के इंगलिश स्कूल में पढ़ने का मौका मिला।

चाईबासा में बिताए गए चार सालों ने बिरसा मुण्डा के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। 189[illegible] [illegible] बिरसा मुण्डा एक सफल नेता के रूप में उभरने लगे जो लोगों में



जागरूकता फैलाना चाहते थे। 1894 में आए अकाल के दौरान बिरसा मुण्डा ने अपने मुण्डा समुदाय और अन्य लोगों के लिए अंग्रेजों से लगान माफी की माँग के लिए आंदोलन किया।

1895 ई० में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, उन्हें हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के लिए कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उनके अनुयायियों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी। यही कारण रहा कि अपने जीवन काल में ही उन्हें एक महापुरुष का दर्जा मिला। उन्हें उस स्थान के लोग "धरती आबा" के नाम से पुकारा और पूजा करते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी। 1897 से 1900 ई० के बीच मुण्डाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे, बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया। अगस्त 1897 में बिरसा और उनके चार सौ सिपाहियों या साथियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूंटी थाने पर धावा बोल दिया। 1898 ई० में तांगा नदी के किनारे मुण्डाओं की भिड़त अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुई। जनवरी 1900 ई० में जहाँ बिरसा मुंडा अपनी जनसभा संबोधित कर रहे थे डोमबाड़ी पहाड़ी पर ... और संघर्ष हुआ था, जिसमें



BIRSA MUNDA CAPTURED" AND CONDUCTED TO

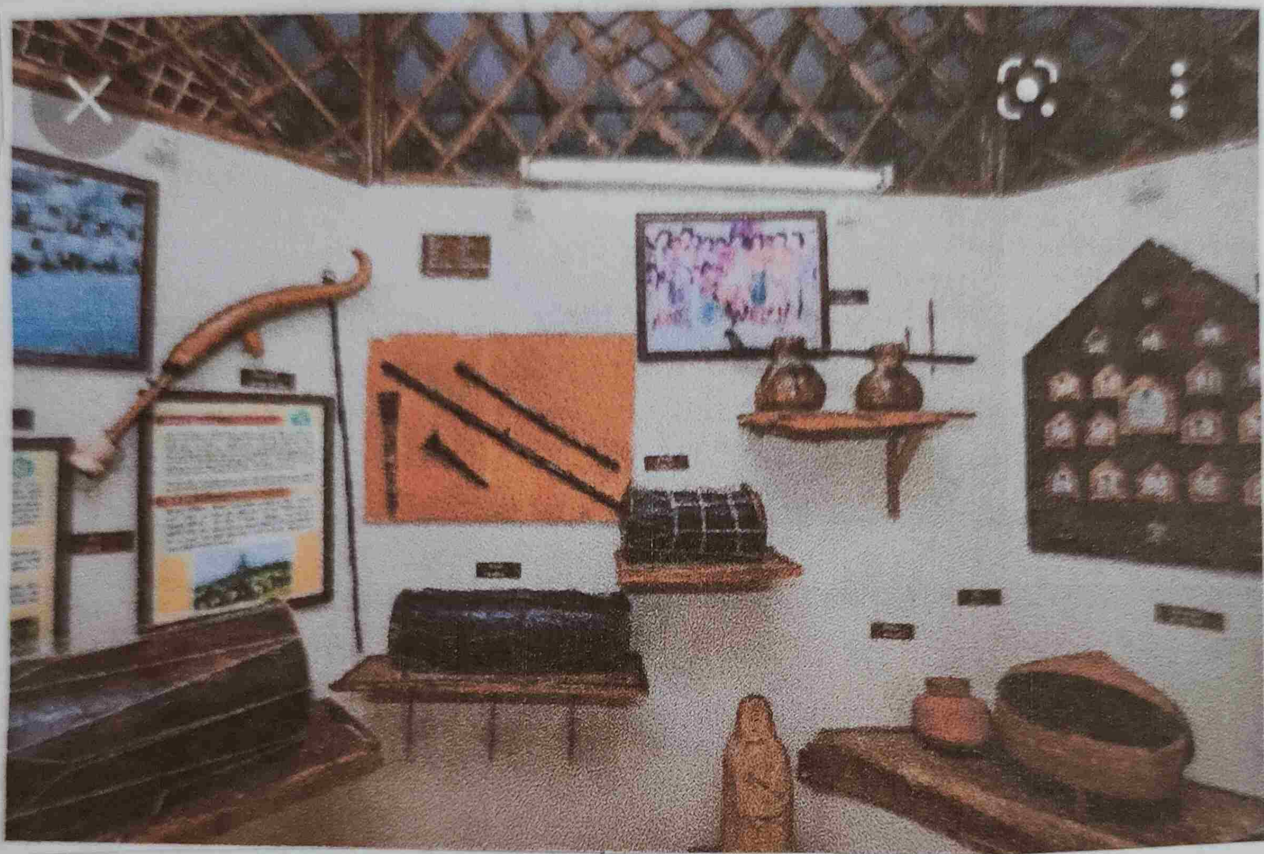
बहुत-सी औरतें और बच्चे मारे गये। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारी भी हुई थी। अंत में स्वयं बिरसा मुण्डा 03 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ़्तार हुए।

बिरसा मुण्डा ने अपनी अंतिम साँसें 09 जून 1900 को राँची कारागार में ली। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा भगवान की तरह पूजे जाते हैं। इतिहास में अर्थात् चाईबासा के इतिहास में इनकी आदिवासी समाज तथा अपनी जन्मभूमि को अंग्रेजों के गुलामी से मुक्त करने तथा उनके रक्षार्थ किए गए इन कार्यों को और उनके द्वारा दिए गए बलिदान और देशप्रेम को इतिहास सदैव याद रखेगा। भगवान बिरसा मुण्डा हमेशा चाईबासा के ऐतिहासिक घटनाओं में स्मरणीय एवं अमर रहेंगे।

चाईबासा के ऐतिहासिक
एवं पौराणिक आदिवासी
जनजाति के कला-संस्कृति
को संजोए रखने हेतु
संग्रहालय

चाईबासा के जनजाति (आदिवासी) के कला और संस्कृति को संजोए रखने हेतु संग्रहालय (अन्य स्थानों पर भी है)

आदिवासी जनजाति की कला तथा संस्कृति को संजोए रखने के लिए कोल्हान के पश्चिमी सिंहभूम जिले में एक-दो नहीं बल्कि 11 ये जनजातीय संग्रहालय स्थापित किए गये हैं। ये संग्रहालय आकार में भले ही छोटे हैं मगर जनजाति से जुड़ी लोक कलाओं और इतिहास की जानकारी बखूबी दे रहे हैं। इनकी खासियत यह है कि ये सभी विद्यालयों में ही बनाए गए हैं। तभी तो इन संग्रहालयों को देखने के लिए विदेश से भी लोग आ चुके हैं। पश्चिम सिंहभूम हो जनजातीय बहुल जिला है। जिले में संग्रहालय स्थापित करने का मुहिम कोल्हान प्रमण्डल के पूर्व शिक्षा उप-निदेशक अरविंद विजय बिलुंग की प्रेरणा से आरंभ किया गया। सर्वप्रथम मंझगाँव प्रखण्ड के मध्य विद्यालय देवघर में 2015 में पहला संग्रहालय स्थापित किया गया। इसी प्रकार प्राथमिक विद्यालय कुरासडीह चक्रधरपुर, मध्य विद्यालय उड़नचोंका सोनुवा, प्राथमिक विद्यालय केंनुवा टोंटो मध्य विद्यालय बंध्येमगुट्ट मनोहरपुर, उत्क्रमित मध्य विद्यालय करकरा गोईलकेरा, टोंटा कॉलेज कॉलोनी मध्य विद्यालय सदर चाईबासा, उत्क्रमित उच्च विद्यालय बालांडीहा हाटगम्हरिया, मध्य विद्यालय अंगाडीहा [illegible] मध्य विद्यालय असुरा सींकपानी



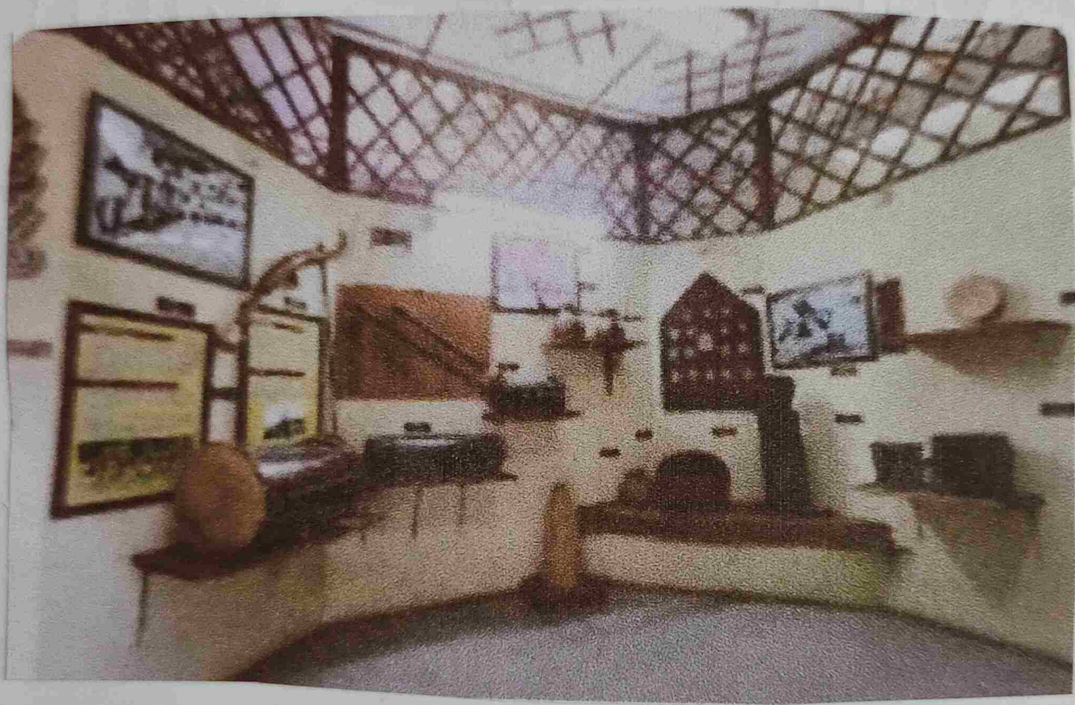
में बनाया गया है। सरकारी शिक्षक कृष्णा देवगम कहते हैं कि संग्रहालय की वस्तुओं का संग्रह शिक्षकों के आपसी सहयोग से किया जाता है। संग्रहालय में जीविकोपार्जन हेतु उपयोग की जाने वाली चीजों से लेकर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से उपयोग में लाई जाने वाली चीजों का संग्रह किया गया है। जैसे - हल, जाल, तीर-धनुष, अनाज के बीज आदि। विद्यालयों में संग्रहालय स्थापित करने के उद्देश्य के बारे में कृष्णा देवगम ने बताया कि बच्चों को उनके परिवेश में मिलने वाली चीजों के नाम के आधार पर अक्षर ज्ञान प्रदान करना एवं भाषा का विकास करना है।

संग्रहालय के दर्शन करने पहुँचे विदेशी

जिले का पहला 'हो' जनजाति के जीवन दर्शन पर आधारित संग्रहालय मध्य विद्यालय देवघर मझगाँव में नीदरलैण्ड के इतिहासकार पॉल स्ट्रमर संग्रहालय का दीदार करने पहुँचे थे। इस के अलावा मझगाँव के फॉरेस्ट रेंजर रवीन्द्रनाथ मराण्डी अपने सहयोगियों के साथ संग्रहालय का अवलोकन कर चुके हैं, मालदा पश्चिम बंगाल के एलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर शिउली किस्कू भी यहाँ आ चुके हैं।

संग्रहालय में हो जनजाति द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं का संग्रह

संग्रहालय में हो जनजाति द्वारा जीवन में प्रयोग



75

किए जाने वाले वस्तुओं का संग्रह किया गया है जो निम्न है —

1. वाद्ययंत्र
2. नगाड़ा
3. मृदंग
4. बांसुरी
5. बनम (देसी सितार)
6. खाद्यान्न संचय करने का बांदी (घड़ा)
7. जंगली फल
8. जड़ी - बूटी
9. हल
10. जाल
11. तीर - धनुष
12. अनाज के बीज आदि।

जनजातियों के वस्त्र

तथा

आभूषण

जनजातियों के वस्त्र तथा आभूषण

वस्त्र:- यहाँ के जनजातियों के तथा धूरे, पश्चिम सिंहभूम एवं आसखूप के जनजातियों के परिधान परम्परागत है। ये स्वयं वस्त्र का निर्माण करते हैं। कपास की खेती की जाती है। पलाश के फूलों से लाल, पीला, नारंगी रंग बनाया जाता है। इनका कपड़ा स्वनिर्मित होने के कारण मोटा होता है। महिलाएँ लाल रंग की किनारी वाली साड़ी पहनती हैं, जिसे 'पढ़िया' कहा जाता है। इसका आँचल चौड़ा और कलात्मक होता है। पुरुषों के परिधान (जैसे- गमछा आदि) में भी लाल किनारी होती है। बहुत पहले जब ये जंगलों में रहते थे, तब पुरुषों का अधोवस्त्र बहुत छोटा होता था, केवल आगे और पीछे के भाग ढकने के लिए बनाया जाने वाले इस वस्त्र को 'तोलोंग' कहते थे। आधुनिक युग में अब ये वस्त्र रीति-रिवाज या परंपरागत विधान के समय ही पहने जाते हैं। युग बदलने और शिक्षा प्रचार-प्रसार के साथ अब जनजातियों ने भी मुख्य धारा के अनुकूल वस्त्र धारण करके अपने समाज को विकासशील बना लिया है।

जनजातियों के आभूषण

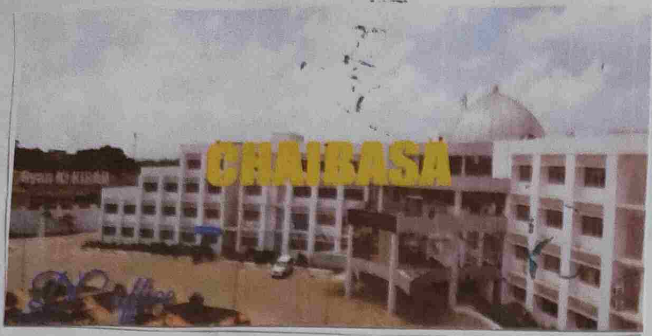
अंग	आभूषण
बाल	ऊंड, खोंगसो, सुरा-खोंगसो, झीका, खोखरी, चिरो-चिलपो आदि।
सिर	टीका, कलगा, मयूरपंख, सिलपट (जीनतो), बंडोमाली (पुरुष) आदि।

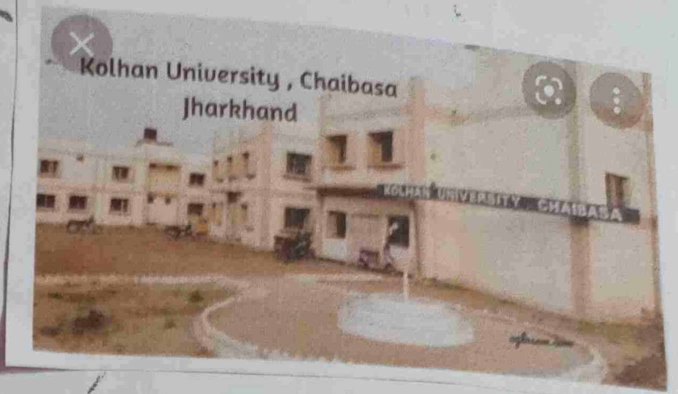
कान	पानरा, तरकी, तरकुला, कर्णफूल, बिडियो, पीपल पत्ता, ठिप्पी, लवंगफूल, तरपत, कुण्डल (पुरुष) आदि।
नाक	नथ, घुघी, मकड़ी आदि।
गला	हंसुली, सकड़ी, बेरनी, हिसिर, चन्दवा, खंभिया, ठोसा, धुन, भुंड़िया, सिकरी, ताबीज (पुरुष) आदि।
बाँह	खागा, तार, साकोम आदि।
हाथ	सौंखा, साकोम, मुटिया, रली, घुंघुर, सीली, बाईकल आदि।
कमर	कमरधनी आदि।
पैर	बांक-बंकी, बटरिया आदि।

चाईबासा शहर के इतिहास का निष्कर्ष

निष्कर्ष

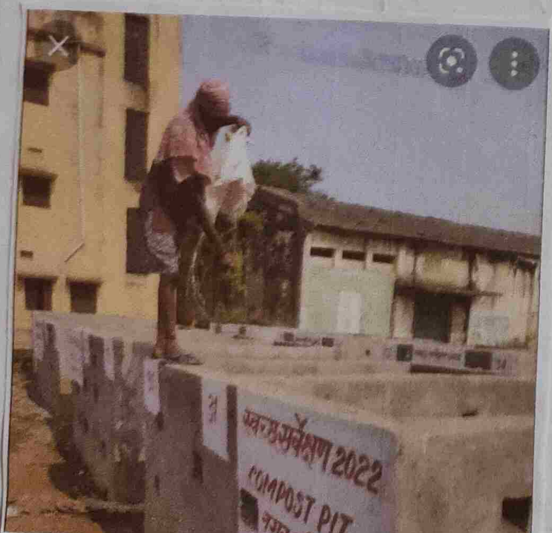
चाईबासा शहर के इतिहास लेखन के पश्चात निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इसके समसामयिक अथवा उम्र में इससे छोटे शहरों का जिस तेजी से विकास हुआ, चाईबासा के विकास की गति उनकी तुलना में धीमी रही, 19वीं - 20वीं सदी के मुख्य सड़क, अथवा रेल यातायात की सुविधा में कमी, गुणात्मक शैक्षिक सुविधा का अभाव, रोजगार के उचित साधनों का नहीं रहना, आवास, पेयजल एवं बिजली संकट के कारण एक समय तक चाईबासा शहर ठिठका हुआ-सा नगर बना रहा। आगमन के स्थान पलायन ही नियति बनती जा रही थी। किन्तु 20वीं सदी के अंत तथा 21वीं सदी के शुरुआती दशक के आस-पास पश्चिम सिंहभूम के विकास में गति होनी आरंभ हुई। पर्यटन के दृष्टिकोण से आकर्षक जिले की ओर पर्यटकों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु नए पर्यटक स्थल तथा आधारभूत सुविधाएँ बढ़ाकर इस शहर में प्राण संचार की गई। यह सक्षम राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सामाजिक नेतृत्व से ही संभव हो पाया है। अब नए डीसी ऑफिस का निर्माण, अमला टोला ऐसएजेएमपी चौक पर रेलवे फाटक के ऊपर ओवर ब्रिज और अण्डरपास का निर्माण, नए पार्क, घंटाघर, स्टील फ्लोर का निर्माण, रोजगार के नए स्त्रोत, शहर की सफाई हेतु सफाई कर्मचारी की नियुक्ति, नए तथा सुविधाजनक हॉस्पिटल, विद्यालयों तथा कॉलेजों का निर्माण, रेल यातायात सुविधाजनक, सोलर पानी टंकी, स्ट्रीट लाईट की सुविधा, ... विद्यालयों तथा कॉलेजों

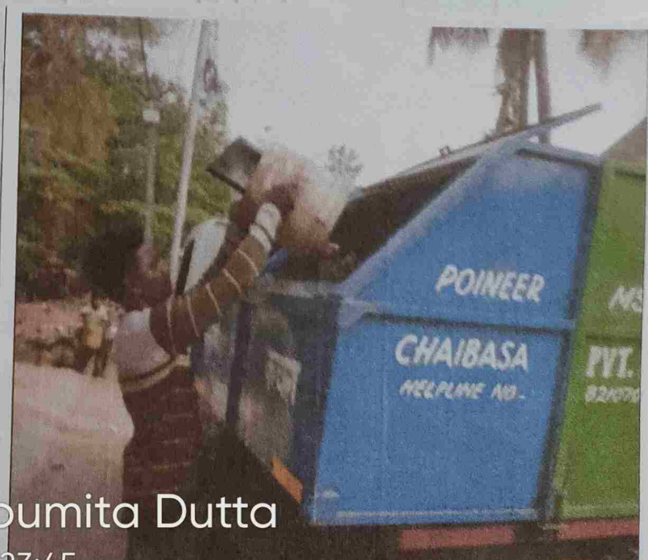

CHAIBASA


Kolhan University , Chaibasa
Jharkhand
KOLHAN UNIVERSITY , CHAIBASA


झलक
श्रेष्ठता

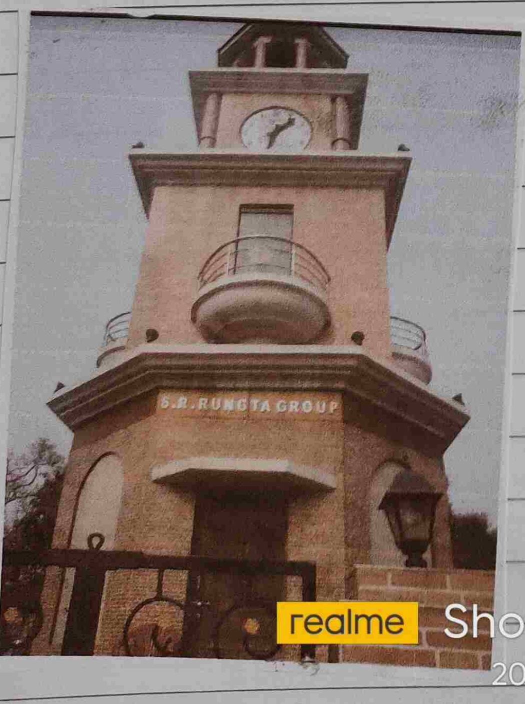


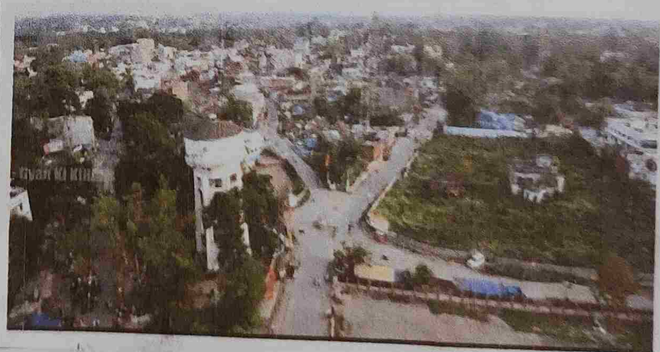

स्वच्छ सर्वेक्षण 2022
COMPOST PIT


POINEER
CHAIBASA
HELPLINE NO.

में आधुनिक उपकरणों द्वारा पढ़ाई होने लगी है। ब्लैक बोर्ड का स्थान अब स्मार्ट बोर्ड ने ले लिया है। रोशनी की भी सुविधा अच्छी हो गई है।

किन्तु फिर भी अबभी बहुत से भागों में विकास होना शेष है। चाईबासा शहर को आदर्श शहर का नाम नहीं मिल पाया है। चाईबासा का स्टेशन पूरी तरह विकसित नहीं हो पाया है। चाईबासा के आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र शिक्षा के क्षेत्र पीछे रह गया है। ग्राम वासी अच्छी शिक्षा एवं चिकित्सा पाने हेतु शहर जाते हैं। चाईबासा शहर में बेरोजगारी की भी समस्या है। विद्यालय एवं कालेजों में शिक्षकों की कमी पायी जाती है। जिससे प्रत्येक विभाग दुरुस्त नहीं हो पाती। हालांकि देखा जाए तो चाईबासा के उत्कर्ष से लेकर विकास तक का सिलसिला बहुत ही रोचक, संघर्षपूर्ण एवं प्रेरणादायक रहा है।





संदर्भ-सूची

संदर्भ सूची

- लेखक - प्रो० डॉ० अशोक कुमार सेन (चाईबासा रत्न से सम्मानित) टाटा कॉलेज
- गुरुद्वारा, चाईबासा के अध्यक्ष - श्री गुरुमुख सिंह खोखर
- पाठक मंच संस्थापक - श्री चिन्मय दत्ता

इसके अलावा इंटरनेट की सहायता से निम्नलिखित वेबसाइटों एवं लिंक के द्वारा मेरी परियोजना कार्य पूर्ण हो पायी है।

* adivasilivesmatter.com
* chaibasa.nic.in
* https://m.jagran.com
* lagatar.in
* www.hmoob.in/wiki / https://www.hmoobin
* https://bhaskar.com
* gaonconnection.com
* Prabhatkhabar.com
* https://chaloghumane.com
* https://examvictory.com
* https://hi.vikaspedia.in
* https://hindi.gktoday.in
* https://homahasabha.org.in
* https://hi.m.wikipedia.org.
* From live.hindustan.com
* books.google.co.in